गीता-दैनन्दिनी

(पूरे वर्षमें सम्पूर्ण गीता-पाठ और मनन करनेका दैनिक उपक्रम)

[सन् १९६० ई०]

हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी और नये भारतीय शक-संवत्के दिनाङ्कसहित

(नेपाली दिनाङ्क (गते) भी प्रायः पंजाबीसे मिलता है)



गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

मुद्रक तथा प्रकाशक—हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर

सन् १९२७ से
सन् १९५९ तक } ११,३३,०००

सन् १९६०—प्रथम संस्करण १,००,०००

कुल १२,३३,०००

कुल बारह लाख तैंतीस हजार

मूल्य ॥=) सजिल्द ।॥)

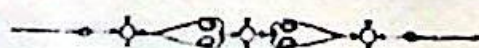
गीताप्रेस, गोरखपुरकी निजी दूकानें

(१) कलकत्ता—गोविन्दभवन कार्यालय, ३०, बाँसतल्ला गली
(२) दिल्ली—गीताप्रेस पुस्तक-दूकान, २६०९, नई सड़क
(३) पटना— ,, अशोकराजपथ
(४) कानपुर— ,, २४/५५, बिरहाना रोड
(५) हरिद्वार— ,, सब्जीमंडी, मोतीबाजार
(६) बनारस—गीताप्रेस कागज-एजेंसी, नीचीबाग
(७) ऋषिकेश—गीता-भवन

विनय

बंदौं चरन-सरोज तिहारे।
सुंदर स्याम कमल-दल-लोचन,
ललित त्रिभंगी प्रान-पियारे॥
जे पद-पदुम सदा सिव के धन,
सिंधु-सुता उर तैं नहिं टारे।
जे पद-पदुम तात-रिस-त्रासत,
मन-बच-क्रम प्रहलाद सँभारे॥
जे पद-पदुम-परस-जल-पावन-
सुरसरि-दरस कटत अघ भारे।
जे पद-पदुम-परस रिषि-पतिनी,
बलि, नृग, ब्याध, पतित बहु तारे॥
जे पद-पदुम रमत बृंदाबन
अहि-सिर धरि, अगनित रिपु मारे।
जे पद-पदुम परसि ब्रज-भामिनि
सरबस दै, सुत-सदन बिसारे॥
जे पद-पदुम रमत पांडव-दल,
दूत भए, सब काज सँवारे।
सूरदास तेई पद-पंकज
त्रिबिध-ताप-दुख-हरन हमारे॥

—'सूर-विनय-पत्रिका' से



सर्वोत्तम कर्तव्य

भक्तिका साधन करना और भगवान्‌की सेवाके रूपमें कर्तव्य-कर्मोंका पालन करना सर्वोत्तम है। अभिप्राय यह कि प्रातःकाल और सायंकाल तथा जब भी अवकाश मिले, एकान्तमें श्रद्धाप्रेमपूर्वक निष्कामभावसे भगवान्‌के नामका जप, उनके स्वरूपका ध्यान और उनके गुण, प्रभाव, तत्त्व, रहस्यका मनन करना तथा गीता-रामायण आदि शास्त्रोंका अध्ययन करना चाहिये एवं अपने न्याययुक्त कर्तव्य-कर्मोंको करते समय तथा हर समय चलते-फिरते, खाते-पीते हुए भी भगवान्‌के नाम-रूपको श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नित्य-निरन्तर स्मरण रखते हुए ही सब काम करना और सम्पूर्ण प्राणियोंमें भगवान्‌का स्वरूप समझकर उनकी निःस्वार्थभावसे सेवा करनी चाहिये। हर समय यही दृष्टि रखनी चाहिये कि दूसरोंका हित किस प्रकार हो।

—'शिक्षाप्रद पत्र' से

भगवान् श्रीरामका प्रजाको उपदेश

बड़ें भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा॥
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।
पाइ न जेहिं परलोक सँवारा॥
सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ॥
एहि तन कर फल बिषय न भाई।
स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई॥
नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं।
पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं॥
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई।
गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई॥
आकर चारि लच्छ चौरासी।
जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी॥
फिरत सदा माया कर प्रेरा।
काल कर्म सुभाव गुन घेरा॥
कबहुँक करि करुना नर देही।
देत ईस बिनु हेतु सनेही॥
नर तनु भव बारिधि कहुँ बेरो।
सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो॥
करनधार सदगुर दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा॥

—'श्रीरामचरितमानस' से

नित्य काममें लानेकी बातें

प्रतिदिन सुबह और शाम मन लगाकर भगवान्‌का स्मरण अवश्य किया करो; इससे चौबीसों घंटे शान्ति रहेगी और मन बुरे संस्कारोंसे बचेगा ।

× × ×

जीवन बहुत थोड़ा है, सबसे प्रेमपूर्वक हिलमिल कर चलो, सबसे अच्छा बर्ताव करो, अमृतका विस्तार कर जाओ, विषकी बूँद भी कहीं न डालो । तुम्हारा प्रेमपूर्ण व्यवहार अमृत है और द्वेषपूर्ण व्यवहार ही विष है ।

× × ×

ईश्वर सदा-सर्वदा तुम्हारे साथ हैं, इस बातको कभी न भूलो, ईश्वरको साथ जाननेका भाव तुम्हें निर्भय और निष्पाप बनानेमें बड़ा मददगार होगा । यह भाव नहीं है, सचमुच ही ईश्वर सदा सबके साथ हैं।

× × ×

कुसङ्गसे सदा बचना चाहिये और सत्सङ्गका आश्रय लेना चाहिये । विषयी पुरुषोंका सङ्ग तो बहुत ही हानिकर है । चेतनकी तो बात ही क्या है । मनको लुभानेवाली और इन्द्रियोंको आकर्षित करनेवाली जड भोग्यवस्तुओंका सङ्ग भी त्याज्य है ।

—'आनन्दकी लहरें' से

भगवान् श्रीकृष्णका उद्धवको उपदेश

'जो संसारकी ओरसे निवृत्त करके मुझे प्राप्त करा देता है, वही सच्चा 'सुमार्ग' है । चित्तकी बहिर्मुखता ही 'कुमार्ग' है । सत्त्वगुणकी वृद्धि ही 'स्वर्ग' और सखे ! तमोगुणकी वृद्धि ही 'नरक' है । गुरु ही सच्चा 'भाई-बन्धु' है और वह गुरु मैं हूँ । यह मनुष्य-शरीर ही सच्चा 'घर' है तथा सच्चा 'धनी' वह है, जो गुणोंसे सम्पन्न है, जिसके पास गुणोंका खजाना है । जिसके चित्तमें असंतोष है, अभावका बोध है, वही 'दरिद्र' है। जो जितेन्द्रिय नहीं है, वही 'कृपण' है। समर्थ, स्वतन्त्र और 'ईश्वर' वह है, जिसकी चित्तवृत्ति विषयोंमें आसक्त नहीं है । इसके विपरीत जो विषयोंमें आसक्त है, वही सर्वथा 'असमर्थ' है । प्यारे उद्धव ! तुमने जितने प्रश्न पूछे थे, उनका उत्तर मैंने दे दिया; इनको समझ लेना मोक्ष-मार्गके लिये सहायक है । मैं तुम्हें गुण और दोषोंका लक्षण अलग-अलग कहाँतक बताऊँ ? सबका सारांश इतनेमें ही समझ लो कि गुणों और दोषोंपर दृष्टि जाना ही सबसे बड़ा दोष है और गुण-दोषोंपर दृष्टि न जाकर अपने शान्त निःसङ्कल्पस्वरूपमें स्थित रहे—वही सबसे बड़ा गुण है ।'

—'श्रीभागवत-सुधा-सागर' से

प्रार्थना

मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन ।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन ॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ।
करउ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन ॥
स्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥
बार बार बर मागउँ हरषि देउ श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥
परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥
भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपासिंधु सुख धाम ।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥
मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंसमनि हरहु बिषम भव भीर ॥
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥

—'श्रीरामचरितमानस'से



भगवान्

(१) भगवान्‌की प्राप्ति इच्छासे होती है ।

(२) भगवान् प्राप्त होनेपर कभी बिछुड़ते नहीं ।

(३) भगवान्‌की प्राप्ति जब होती है, पूरी होती है ।

(४) भगवान्‌को प्राप्त करनेकी इच्छा होते ही पापोंका नाश होने लगता है ।

(५) भगवान्‌को प्राप्त करनेकी साधनामें शान्ति मिलती है ।

(६) भगवान्‌का स्मरण करते हुए मरनेवाला सुख-शान्तिपूर्वक मरता है ।

(७) भगवान्‌का स्मरण करते हुए मरनेवाला निश्चय ही भगवान्‌को प्राप्त होता है ।

बातें

भोग

(१) भोगोंकी प्राप्ति कर्मसे होती है, इच्छासे नहीं होती।

(२) भोग बिना बिछुड़े कभी रहते नहीं।

(३) भोगोंकी प्राप्ति सदा अधूरी ही होती है।

(४) भोगोंको प्राप्त करनेकी इच्छा होते ही पाप होने लगते हैं।

(५) भोगोंको प्राप्त करनेकी साधनामें अशान्ति बढ़ती है।

(६) भोगोंका स्मरण करते हुए मरनेवाला अशान्ति-दुःखपूर्वक मरता है।

(७) भोगोंका स्मरण करते हुए मरनेवाला निश्चय ही नरकोंमें जाता है।

कुछ जानने योग्य बातें

१–रेलभाड़ा प्रति मील

श्रेणी	मील१से१५०	१५१से३००	३०१ या ऊपर
समशीतोष्ण	३४ पाई	३४ पाई	३२ पाई
प्रथम	१८ ,,	१६ ,,	१५ ,,
द्वितीय(मेल-एक्स.)	११ ,,	१०॥ ,,	९॥ ,,
,, (साधारण)	९॥ ,,	९ ,,	८॥ ,,
तृतीय(मेल-एक्स.)	६। ,,	६ ,,	५ ,,
,, (साधारण)	५। ,,	५ ,,	४॥ ,,

तृतीय (साधारण) १ से ५० मीलतक ५ पाई प्रति मील।

उपर्युक्त भाड़ेपर सरचार्य–१६ मीलसे ३० तक ५%, ३१ मीलसे ५०० तक १५% और ५०१ मीलसे अधिकपर १०% अधिक लगता है।

तीन वर्षतकके बच्चे बिना टिकट तथा बारह वर्ष-तकके आधी टिकटमें जा सकते हैं।

२–समशीतोष्ण श्रेणीका यात्री १॥ मन, प्रथमका १ मन, द्वितीयका ३० सेर और तीसरेका २५ सेर असबाब बिना किराये ले जा सकता है। ज्यादा हो तो तौलाकर महसूल दे देना चाहिये, नहीं तो पकड़े जाने-पर यदि समशीतोष्ण श्रेणीका १५ सेर, तथा अन्य श्रेणीवालोंका १० सेर वजनसे अधिक होगा तो पूरे सामानका महसूल लगेगा।

३-रेलपार्सल और लगेजका भाड़ा-पहले १०० मीलतक ४ पाई प्रतिमन प्रतिमील, इसके बादके १०० मीलपर ३ पाई प्रतिमन प्रतिमील, उसके बादके ५०० मीलपर २ पाई प्रतिमन प्रतिमील और उसके बादके मीलोंपर १½ पाई प्रतिमन प्रतिमील लगता है।

पुस्तकें आदि कुछ चीजोंके अतिरिक्त शेष सभीपर दो आना प्रतिरुपया सरचार्ज तथा कर और लगता है।

४-रेलयात्रामें-कम-से-कम २०० मीलके यात्री १५० मील यात्रा कर चुकनेपर ही रास्तेमें रुक सकते हैं। वे अपने टिकटके प्रति १०० मील या उसके किसी अंशपर एक दिनके हिसाबसे रुक सकते हैं।

५-रेल-कर्मचारी बिना रसीद दिये कोई रकम नहीं ले सकता। अनुचित ली हुई रकम रसीदके आधारसे लिखा-पढ़ी करके वापस ले सकते हैं।

६-यदि कोई कर्मचारी यात्रीसे असभ्यताका व्यवहार करे तो उसी लाइनके डिविजनल सुपरिंटेंडेंट या चीफ आपरेटिंग सुपरिंटेंडेंटसे शिकायत करनी चाहिये।

७-रेलवेपर मालसम्बन्धी कोई नालिश करनी हो तो बिल्टीकी तारीखसे छः मासके अंदर रेलवेके जनरल मैनेजरको रजिस्टर्ड नोटिस जरूर दे दें, नहीं तो सुनायी नहीं होती।

८-यात्रामें कहीं ठहरना हो तो स्टेशनमास्टरसे

रसीद लेकर, असबाब उनके पास छोड़ सकते हैं। एक अददका—पहले दिन दो आना, दूसरे दिनसे एक आना लगेगा।

डाक—डेढ़ तोलेतककी चिट्ठीपर १५ नये पैसे, इसके बाद प्रति १॥ तोले या उससे कमपर भी १० नये पैसेका टिकट लगता है। भारत, पाकिस्तान और सिलोनके लिये एक ही नियम है। अन्तर्देशीय (Inland) लिफाफे १० नये पैसेमें मिलते हैं।

२–कार्ड ५ नये पैसेका, जवाबी कार्ड १० नये पैसेका होता है। कार्ड बड़े-से-बड़ा ५$\frac{७}{८}$''×४$\frac{१}{८}$'' छोटे-से-छोटा ४''×२$\frac{७}{८}$'' जा सकता है।

३–पुस्तक पैकेटके रूपमें दोनों ओर खुली पैक करके भेजनेसे प्रथम ५ तोला ५ नये पैसे, बादमें प्रति २॥ तोला ३ नये पैसे लगते हैं। पुस्तकके अतिरिक्त अन्य बुकपोस्टपर प्रथम ५ तोला ८ नये पैसे, बादमें प्रति २॥तोला ३ नये पैसे लगते हैं। नमूनेका पैकेट २०० तोलेतकका जा सकता है।

४–रजिस्ट्री किये हुए सामयिक पत्रोंका १० तोले-तक २ नये पैसे, २० तोलेतक ३ नये पैसे, इसके बाद प्रति २० तोले या उसके किसी अंशपर ३ नये पैसे लगते हैं।

५–एक्सप्रेस डिलीवरी–सामान्य डाकखर्चसे १३ नये पैसे अधिक लगानेसे पत्रके यथास्थान पहुँचनेपर उसे

नजदीकके तारघरमें भेजकर तारकी तरह डिलीवर कराया जाता है। यह डिलीवरी रविवारको भी की जाती है।

६–बीमा करानेका नियम १००) तक ३७ नये पैसे, इसके बाद प्रतिसैकड़ा या उसका कोई अंश २० नये पैसे, बिना रजिस्ट्री बीमा और वी० पी० नहीं होता। दो (चपड़ीकी) मोहरोंके बीचमें २ इंचसे अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये।

७–रजिस्ट्री करानेके ५० नये पैसे अलग लगते हैं और वापसी रसीदसहित रजिस्ट्रीके ५६ नये पैसे लगते हैं।

८–पारसलके १००० तोलेतक प्रति ४० तोले ५० नये पैसे लगते हैं। ४४० तोलेसे ऊपरके पारसलकी रजिस्ट्री अनिवार्य है।

९–मनीआर्डरकी दर नीचे वी० पी० में दी गयी है।

१०–सर्टिफिकेटका नियम–बिना रजिस्ट्रीका पारसल, चिट्ठी, पैकेट या कार्ड, डाकघरका सर्टिफिकेट लेकर भेजा जा सकता है। तीन नये पैसेमें पारसल, चिट्ठी, कार्ड या पैकेट ३ तकका सर्टिफिकेट मिलता है।

११–वी० पी०–रजिस्ट्री पारसल, पैकेट या चिट्ठी वी० पी० से जा सकती है। इनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके पोस्ट-आफिस मनीआर्डरसे भेजनेवालेके पास पहुँचा देती है। मनीआर्डरकी दर १०) तक १५ नये पैसे, उसके बाद प्रति १०) तक १५ नये पैसे

लगते हैं। वी० पी० १०००) तककी भेजी जा सकती है। मनीआर्डर-खर्च वी० पी० पानेवाला देता है। २५) रुपये तककी वी० पी० पर ६ नये पैसे, उससे ऊपर १२ नये पैसे वी० पी० चार्ज लगता है। वी० पी० ५ दिनतक मुफ्तमें, इसके बाद ५ दिनतक १२ नये पैसे प्रतिदिनके हिसाबसे देकर रोकी जा सकती है।

१२–तार–आठ शब्दतक साधारण तारका ८० नये पैसे, जल्दी जानेवालेका १.६० नये पैसे लगता है, अधिक शब्दोंके लिये साधारणका ८ नये पैसे और शीघ्रगामीका १६ नये पैसे प्रतिशब्द लगता है। जवाबी तारके लिये साधारणका ८० नये पैसे तथा शीघ्रगामीका १.६० नये पैसे और अधिक लगता है। जवाबी फार्म काममें न लाया जाय तो दो महीनेतक (टेलीग्राफ चेक आफिस कलकत्तासे) दाम वापस मँगा सकते हैं। उत्सव, बधाई आदिके तार किफायतसे जाते हैं।

१३–प्रेसके लिये ५० शब्दके साधारण तारका ७५ नये पैसे, जल्दी जानेवालेका १.५० नये पैसे लगते हैं, इसके बाद प्रति ५ शब्दके ७ नये साधारणके और १३ नये पैसे शीघ्रगामीके लगते हैं। कापीका १०० शब्दतकके ३१ और बादमें प्रति २० शब्दके ७ नये पैसे लगते हैं।

१४–डाक और तारकी शिकायतें प्रादेशिक पोस्टमास्टर जनरलको करनी चाहिये।

इनकम-टैक्स–५०००) तककी आयमें इस प्रकार लगता है।

१–अविवाहित व्यक्तिके लिये–१०००) तक कुछ नहीं बादके ४०००) पर ३) प्रतिशत।

२–विवाहित (जिसके आश्रित संतान न हो)–३०००) तक कुछ नहीं बादके २०००) पर ३) प्रतिशत।

३–जिसके एक संतान आश्रित हो–३३००) तक कुछ नहीं बादके १७००) पर ३) प्रतिशत।

४–जिसके एकसे अधिक संतान आश्रित हो–३६००) तक कुछ नहीं बादके १४००) पर ३) प्रतिशत।

५–५०००) के बादके		२५००)	पर	६)	प्रतिशत।
उसके	"	२५००)	"	९)	"
"	"	२५००)	"	११)	"
"	"	२५००)	"	१४)	"
"	"	५०००)	"	१८)	"

उसके बादके कुल आमदनीके शेषांशपर २५) प्रतिशत

नोट–२००००) से अधिककी आयवालोंपर पहले ५०००) की न० २-३-४ की दर लागू नहीं पड़ती।

सरचार्ज–७५००) तककी आयपर नहीं लगता। उससे अधिक आयपर ५) प्रतिशत लगता है। एक लाखके बाद ५) प्रतिशत अधिक लगता है। अनुपार्जित आयपर १५) प्रतिशत और लगता है।

सुपर-टैक्स–२००००) तककी आयपर नहीं लगता। उसके बादके आमदनीपर क्रमशः बढ़ते हुए दरसे ४५) प्रतिशततक लगता है। उसपर सरचार्ज अलग लगता है।

मृत्यु-कर (Estate Duty) नहीं लगता यदि—

(१) मिताक्षरा, मरुमकटयम (Marumakkattayam) या अलीयसन्तान (Aliayasantana) विधिद्वारा शासित संयुक्त हिंदू-परिवारकी सम्पत्तिमें किसीका स्वार्थ ५००००) के मूल्याङ्कनकी सम्पत्तिसे अधिक न हो।

(२) अन्य किसी विधिद्वारा शासित सम्पत्ति, जिसका मूल्याङ्कन एक लाखसे अधिक न हो।

मृत्यु-करकी दरें

सम्पत्तिका मूल्याङ्कन—	संयुक्त पारिवारिक सम्पत्ति	अन्य किसी तरह-की सम्पत्ति
(१) प्रथम ५०,०००) तक	कुछ नहीं	कुछ नहीं
(२) उसके बाद ५०,०००) ,,	५) प्रतिशत	,,
(३) ,, ५०,०००) ,,	७॥) ,,	७॥) प्रतिशत
(४) ,, ५०,०००) ,,	१०) ,,	१०) ,,
(५) ,, १,००,०००) ,,	१२॥) ,,	१२॥) ,,
(६) ,, २,००,०००) ,,	१५) ,,	१५) ,,
(७) ,, ५,००,०००) ,,	२०) ,,	२०) ,,
(८) ,, १०,००,०००) ,,	२५) ,,	२५) ,,
(९) ,, १०,००,०००) ,,	३०) ,,	३०) ,,
(१०) ,, २०,००,०००) ,,	३५) ,,	३५) ,,
(११) बादके शेषाङ्कपर	४०) ,,	४०) ,,

माप-तौलकी सूची

भारतीय वजन

१ रुपये भरका १ तोला
५ तोलेका १ छटाँक
२ छटाँक या १० तोलेका ½ पाव
२० तोलेका १ पाव
२ पावका आधसेर
४ पाव या दो आधसेरका १ सेर (या ८० तोला)
५ सेरकी एक पसेरी
८ पसेरीका १S मन
२४ तोलेका S१ सेर (मद्रासी)
३९ तोलाका १ रतल (बंबई)

अंग्रेजी वजन

१६ ड्रामका १ औंस
१६ औंसका १ पौंड (lb.)
२८ पौंडका १ कार्टर
४ का० या ११२ पौंडका
१ हंडरवेट (cwt)=१।S४।≡
२० हंडरवेट (हंडर) का
१ टन=२२४० पौंड=
मन २७S८।।।

विदेशी सिक्का

ब्रिटेन १ पौंड=१३।-)।
अमेरिका १ डालर=१०० सेंट =७ शिलिंग=४।।।)।। करीब
पाकिस्तान-१००) का पाक १००)
फ्रांस-१ फ्रांक=१०० सेंटाइम् =१) में ७३।।
नारवे-१००) का १५० क्रोनर
स्वीडन-१००) का १०९ क्रोनर

रास्तेका अंग्रेजी माप

१ पैसा=१ इंच
१२ इंचका १ फुट
३ फीटका १ गज
२२० गजका १ फलांग
१७६० गजका १ माइल

रास्तेका देशी माप

४ अंगुलकी १ मुष्टि
६ मुष्टिका १ हाथ
४ हाथका १ धनु
२००० धनुका १ कोस

बीघा

१ युक्तप्रां० बीघा=३०२५वर्ग०
१ बङ्गाली „ १६००„
१ बम्बैया बीघा=३९२७वर्गगज
१ मद्रासी „ =३४०० „
१ पंजाबी „ =१६२० „

समय

६० अनुपलका १ विपल
६० विपलका १ पल
६० सेकंडका १ मिनट
६० पल या २४ मिनटकी १ घड़ी
२॥ घड़ीका १ घंटा
७॥ घड़ी या ३ घंटेका १ पहर
८ पहर या २४ घंटेका १ दिन-रात
७ दिनका १ सप्ताह
२ सप्ताहका १ पक्ष
२ पक्षका १ महीना
१२ महीनेका एक वर्ष
१२ वर्षका एक युग
१०० वर्षकी १ शताब्दी

वैद्यक वजन

४ धानकी १ रत्ती
८ रत्तीका १ माशा
१२ माशेका १ तोला

कागजका माप इंचोंमें

फूल्सकैप १३॥×१७ इंच
डबलफूल्सकैप—१७×२७
क्राउन—१५×२०
डबल क्राउन—२०×३०
काड क्राउन—३०×४०
लार्जपोष्ट—१६×२१
डिमाई—१८×२२
डबल डिमाई—२२×३६
मीडियम—१८×२३
रॉयल—२०×२६
डबल रॉयल२६×४०
सुपर रॉयल २२×२९
ड० सुपर रॉयल—२९×४४

सूतका माप

१॥ गजका १ धागा
१२० „ १ गुच्छी (Lea)
७ गुच्छीकी १ आटी (Hank)
१८ आटीकी१चरखी (Spin)

१ अक्टूबर १९५८ से भारतमें प्रचलित मेट्रिक प्रणालीके नये

माप

१० मिलिमीटर=१ सेन्टीमीटर
= .३९ इंच

१० सेन्टीमीटर=१ डेसीमीटर
= ३.९४ इंच

१० डेसीमीटर=१ मीटर
=३९.३७ इंच

१० मीटर=१ डेकामीटर

१० डेकामीटर=१ हेक्टोमीटर

१० हेक्टोमीटर=१ किलोमीटर
=करीब ५ फलांग

१ इंच = २५.४० मिलिमीटर

१० ,, = २५४ ,,

१ गज = .९१ मीटर

१० ,, = ९.१४ ,,

१ एकड़= ०.४० हेक्टोमीटर

१० ,, = ४.०५ ,,

१ माइल= १.६१ किलोमीटर

१० ,, = १६.९ ,,

तौल

१० मिलिग्राम = १ सेन्टीग्राम

१० सेन्टीग्राम = १ डेसीग्राम

१० डेसीग्राम = १ ग्राम

१० ग्राम = १ डेकाग्राम

१० डेकाग्राम = १ हेक्टोग्राम

१० हेक्टोग्राम = १ किलोग्राम
= २.२ पौंड

१ तोला = ११.६६ ग्राम

१० ,, = ११६.६४ ,,

१ पौंड = ०.४५ किलोग्राम

१० ,, = ४.५४ ,,

१ सेर = .९३ ,,

१० ,, = ९.३३ ,,

१ मन = ३७ ,,
= ०.३७ क्विन्टल

१० ,, = ३.७३ ,,



पुराने पैसेकी नये पैसेमें

परिवर्तन सारणी

आने पाइयाँ	नये पैसे	आने पाइयाँ	नये पैसे	आने पाइयाँ	नये पैसे	आने पाइयाँ	नये पैसे
० ३	२	४ ३	२७	८ ३	५२	१२ ३	७७
० ६	३	४ ६	२८	८ ६	५३	१२ ६	७८
० ९	५	४ ९	३०	८ ९	५५	१२ ९	८०
१ आना	६	५ आने	३१	९ आने	५६	१३ आने	८१
१ ३	८	५ ३	३३	९ ३	५८	१३ ३	८३
१ ६	९	५ ६	३४	९ ६	५९	१३ ७	८४
१ ९	११	५ ९	३६	९ ९	६१	१३ ९	८६
२ आने	१२	६ आने	३७	१० आने	६२	१४ आने	८७
२ ३	१४	६ ३	३९	१० ३	६४	१४ ३	८९
२ ६	१६	६ ६	४१	१० ६	६६	१४ ६	९१
२ ९	१७	६ ९	४२	१० ९	६७	१४ ९	९२
३ आने	१९	७ आने	४४	११ आने	६९	१५ आने	९४
३ ३	२०	७ ३	४५	११ ३	७०	१५ ३	९५
३ ६	२२	७ ६	४७	११ ६	७२	१५ ६	९७
३ ९	२३	७ ९	४८	११ ९	७३	१५ ९	९८
४ आने	२५	८ आने	५०	१२ आने	७५	१६ आने	१००

दैनिक वेतन और मकानभाड़ा चुकानेका नकशा

मासिक रुपये	२८ दिनका महीना तो १ दिनका रु० न०पै०	२९ दिनका महीना तो १ दिनका रु० न०पै०	३० दिनका महीना तो १ दिनका रु० न०पै०	३१ दिनका महीना तो १ दिनका रु० न०पै०
१	०·०४	०·०३	०·०३	०·०३
२	०·०७	०·०७	०·०७	०·०६
३	०·११	०·१०	०·१०	०·१०
४	०·१४	०·१४	०·१३	०·१३
५	०·१८	०·१७	०·१७	०·१६
६	०·२१	०·२१	०·२०	०·१९
७	०·२५	०·२४	०·२३	०·२३
८	०·२९	०·२८	०·२७	०·२६
९	०·३२	०·३१	०·३०	०·२९
१०	०·३६	०·३४	०·३३	०·३२
२०	०·७१	०·६९	०·६७	०·६५
३०	१·०७	१·०३	१·००	०·९७
४०	१·४३	१·३८	१·३३	१·२९
५०	१·७९	१·७२	१·६७	१·६१
६०	२·१४	२·०७	२·००	१·९४
७५	२·६८	२·५९	२·५०	२·४२
१००	३·५७	३·४५	३·३३	३·२३
१५०	५·३६	५·१७	५·००	४·८४
२००	७·१४	६·९०	६·६७	६·४५
५००	१७·८६	१७·२४	१६·६७	१६·१३
१०००	३५·१७	३४·४८	३३·३३	३२·२६

अनुभूत घरेलू प्रयोग

रोग होनेपर संयम और आवश्यक परहेज रखना सबसे जरूरी है।

सर्दीका बुखार—तुलसीके पत्ते १०, काली मिरच १०, खूबकला १ तोला, पोदीना ॥) भर, धनिया १ तोला, आधसेर पानीमें चढ़ाकर, आधपाव रह जानेपर १ तोला मिश्री मिलाकर पीना चाहिये।

बुखारमें जलन—पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर दो तोले अंदाज नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर काँसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊँचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े; दस मिनटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर—(श्याम) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ का काढ़ा बुखार चढ़े रहने और उतरनेपर भी पीता रहे। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बाँधनी चाहिये। १० पत्ते तुलसीके, १० काली मिरचके साथ रोज चबाने चाहिये।

उदरामय—सौंफ तवेपर सेंककर १ भर और कच्ची १ भर मिलाकर ॥) भर मिश्रीके साथ पीसकर फाँके।

पेट फूलना—नमक एक आना भर और अजवायन ॥) भर मिलाकर खाय।

मन्दाग्नि—एक-एक आनाभर सैन्धव नमक

और भूँजा हुआ हींग प्रतिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, भोजनके कुछ पहले नमकके साथ थोड़ी-सी कच्ची अदरख सेवन करे।

आँवके दस्त–सूखा बेल, पुराना गुड़, काली मिरच पीसकर बराबर मात्रा १ तोला पी ले। अथवा एक-एक तोला इसबगोल और मिश्री मिलाकर फाँक ले। खून पड़ता हो तो दूबका रस २ तोले पीवे।

कृमि–विडंगचूर्ण आधा तोला शहदके साथ ले, या नीमकी पत्तीका रस आधा तोला पी ले।

नहरुवा–प्रतिदिन दो आना भर कपूर आधपाव दहीमें घोलकर तीन दिन पीनामात्र ही इसकी अक्सीर दवा है। वमन हो तो घबराये नहीं। परहेज कुछ नहीं।

बवासीर–खून पड़ता हो तो दूबका रस १ छटाँक चीनी मिलाकर या नागकेसर एक तोला चीनी मिलाकर पीसकर ले। दर्दमें भाँगकी धूई दे। खून न पड़ता हो तो हर्रे २ तोला गोमूत्रमें पीसकर गुड़के साथ सात दिनतक ले। खून पड़ता हो तो फिटकिरीके जलसे शौचके समय अंग धोना चाहिये।

सर्दी–थोड़ा-सा कपूर खाना और सूँघना चाहिये।

खाँसी-श्वास–आधा पाव तीसीको भूनकर उसमें आधा तोला पीसा हुआ गोंद डालकर शहदमें

आगपर पका ले। दिनमें चार-पाँच बार आठ-आठ आनेभर खावे। अनुभूत है। आलू बिल्कुल न खावे।

श्वास—पीपलकी छालका चूर्ण या खैरकी लकड़ीका चूर्ण दो आना अथवा मोरपंखकी भस्म एक आना शहदके साथ सेवन करे। संयम और परहेजसे रहे।

किसी जगह कट जानेपर—बरफ या पानीकी पट्टी रक्खे या गेंदेके फूल पीसकर बाँधनेसे खून बंद हो सकता है।

खुजली—दो रत्ती शुद्ध गन्धक केलेमें दबाकर या शहदके साथ प्रतिदिन खावे। चावल मोगरेका तेल या कपूर मिलाया हुआ नारियलका तेल लगाकर धूपमें बैठे। नीम-पत्तोंके जलसे धोवे।

दाद—माजूफलका चूर्ण आठ तोला, इमलीकी छालकी भस्म १ तोला, कपूर आठ आना नारियलके तेलमें मिलाकर लगावे।

फोड़ा—चिकनी मिट्टी पानीमें सानकर उसे फोड़े-पर बाँध ले, या अनन्तमूलकी जड़ पीसकर उसका चारों ओर लेप करे।

मेह—कच्ची हल्दीका रस आधी छटाँक रोज पीवे।

हिचकी और मूर्च्छा—पाँच-सात काली मिरच सुईकी नोकमें पिरोकर रोगीकी नाकमें उसका धुआँ दे।

सर्पविष–अड़हुल (जवापुष्प,अजापुष्प) का मूल पीसकर पिला देनेसे विषैले सर्पका विष दूर हो सकता है। दुग्धके साथ पीनेसे खूनके विकारको दूर करता है।

मृगी–अपामार्गकी जड़ या पत्तोंको पीसकर उसमें गोल मिरच तथा सौंफ मिलाकर पीनेसे अपस्मार (मृगी) का रोग दूर होता है।

सिर दुखना–पुराने गुड़के साथ सोंठका चूर्ण मिलाकर सूँघे। सोंठ, बादाम, अफीम, कपूर, सफेद चन्दनके साथ पीसकर जरा-सा गरम करके लेप करे। अफीम बहुत थोड़ा डाले। कपूर, पीपरमेंट और अजवाइनके फूल बराबर मिलाकर अमृतधारा बना ले, उसका लेप करे।

वात–आधी छटाँक धतूरेके बीज कूटकर तीन पाव खालिस सरसोंके तेलमें सात दिन भिगो-छानकर उस तेलकी मालिस करे।

प्रदर–मुलेठी दो तोला, चीनी दो तोला, चावल धोये हुए जलमें पीसकर दिनमें दो बार सेवन करे। इससे रक्तप्रदर भी मिट सकता है। अशोकछालके क्वाथसे प्रदर आराम होता है।

रक्तस्राव–रज बहुत पड़ता हो तो नागकेसर-की फाँकी या दूबका रस पीना चाहिये। पेटपर ठंडे पानीकी पट्टी रखनी चाहिये।

बहुमूत्र–पुराने गुड़के साथ काले तिल भूँजकर लड्डू बना ले, रोज दो लड्डू खाय।

आधा सीसी–सबेरे ४ बजे आधा तोला भूना हुआ सोहागा पीसकर एक तोला घी और एक तोला चीनीके साथ खाना चाहिये।

कण्ठ जलना–खूब मोटे आटेकी रोटियाँ खाना और कुछ शारीरिक श्रम करना चाहिये।

आँखकी दवा–पलास (ढाक) की हरी जड़के छोटे-छोटे टुकड़े ढाई-तीन सेर, एक चौड़े मुँहके मिट्टीके पुराने बड़े घड़ेमें भर दे। उनपर घड़ेके अंदर ही मिट्टीकी नयी छोटी चौड़े मुँहकी एक हाँड़ी जमा दे। घड़ेका मुँह ठंडा पानी भरी हुई एक हँडियासे बंद करके आटेकी खाम लगा दे, ताकि भाफ बाहर न निकले। एक घंटे मंदी, दो घंटे मध्यम आँच देता रहे, गरम होनेपर हँडियामें ठंडा पानी धीरेसे बदलता रहे। अंदरकी जड़ीमेंसे भाफ निकलकर, ठंडे पानीकी हँडियाके पेदेमें टकराकर अर्कके रूपमें, अंदरकी हाँड़ीमें ३०-४० तोले जमा हो जायगी। अन्तमें अर्ककी हाँड़ी निकालकर. फिल्टर पेपर, स्याहीसोख या चार तहवाली साफ खादीसे छानकर, आँखमें नित्य एक-दो बूँद डाले। साफ सीसीमें सफाईसे रखे, नहीं तो दवा बिगड़ जायगी। यह दवा अनेक नेत्र-रोगोंपर अचूक है।

स्वास्थ्य-रक्षाके सप्त-सूत्र

१–सूर्योदयसे पहले नित्य-शौच जाना, नहाना, दाँत साफ करना, शुद्ध हवामें टहलना, संध्या, सूर्यनमस्कार आदि और कुछ शारीरिक परिश्रम करना—ये जरूरी हैं।

२–भोजन–ताजा, साफ, हल्का, शुद्ध-सात्त्विक और सादा हो, हाथ-चक्कीका मोटा आटा, ढेकीके चावल, गुड़, फल, शाक और दूध—ये विशेष लाभदायक हैं। कभी-कभी केवल फलाहार करना या उपवास करना जरूरी है।

३–पीनेका पानी–साफ, शुद्ध, गन्धहीन हो, दो सेर प्रतिदिन तो पीना ही चाहिये। जहाँ पानी गंदा हो या बीमारी फैली हो तो उबालकर ठंडा कर लें।

४–घर–साफ-सुथरा, धूप और हवादार हो। जाड़ेमें भी हवा आनेकी खिड़की रातमें खुली रक्खें।

५–मुँह ढककर या एक बिस्तरपर दोका सोना, जहाँ-तहाँ थूकना, कूड़ा-गंदगी फैलाना बुरा है।

६–कपड़ा–हल्का, थोड़ा (कामभर), ढीला, पसीनासोख, सफेद और स्वच्छ हो। खादीमें सब गुण हैं, गरमीमें ठंडी और जाड़ेमें गरम भी रहती है।

७–सोना, उठना, आहार-व्यवहार और परिश्रम नित्य नियमित हो। इन्द्रियोंका संयम, सद्‌गुणोंका संचय, प्रमाद-आलस्य और तामसी वस्तुओंका त्याग—ये सब **दीर्घायु और स्वास्थ्यप्रद हैं।**

वंदे नंदनंदनं देवं



गीतोपदेश

गीताध्ययनका माहात्म्य

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥

(गीता १८ । ७०)

प्रश्न—उसके द्वारा भी मैं ज्ञानयज्ञसे पूजित होऊँगा, यह मेरा मत है—इस वाक्यका क्या भाव है ?

उत्तर—इससे भगवान्ने गीताशास्त्रके उपर्युक्त प्रकारसे अध्ययनका माहात्म्य बतलाया है । अभिप्राय यह है कि इस गीता-शास्त्रका अध्ययन करनेसे मनुष्य-को मेरे सगुण-निर्गुण और साकार-निराकार तत्त्वका भलीभाँति यथार्थ ज्ञान हो जाता है । अतः जो कोई मनुष्य मेरा तत्त्व जाननेके लिये इस गीताशास्त्रका अध्ययन करेगा, मैं समझूँगा कि वह भी ज्ञानयज्ञके द्वारा मेरी पूजा करता है । यह ज्ञानयज्ञरूप साधन अन्य द्रव्यमय साधनोंकी अपेक्षा बहुत ही उत्तम माना गया है (४ । ३३); क्योंकि सभी साधनोंका अन्तिम फल भगवान्के तत्त्वको भलीभाँति जान लेना है; और वह फल इस ज्ञानयज्ञसे अनायास ही मिल जाता है, इसलिये कल्याणकामी मनुष्यको तत्परताके साथ गीताका अध्ययन करना चाहिये ।

—'गीता-तत्त्वविवेचनी' से

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ॥
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसै मनका ॥प्रभु०॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ॥ ॐ ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ प्र० ॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्र० ॥
परब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणाके सागर, तुम पालन-कर्ता ॥ प्र० ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ॥ प्र० ॥
किस बिधि मिलूँ दयामय मैं तुमको कुमती ॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्र० ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्र० ॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा ॥ ॐ ॥

—'आरती-संग्रह'से



ॐ

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

१ जनवरी १९६०] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० १७ पौष सं० २०१६] [भा० पौष ११ शक सं० १८८१
पौष शुक्ल ३ शुक्र सं० २०१६ [1 January 1960

२ (दिन) पौष शुक्ल ४ शनि [गीता

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥

२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० १८ पौष] 2 January [भा० पौष १२

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

३ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० १९ पौष] 3 January [आ० पौष १३

४ (दिन) पौष शुक्ल ६ सोम [गीता

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥८॥

४ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० २० पौष] 4 January [भा० पौष १४

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१०॥

---

५ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० २१ पौष] 5 January [भा० पौष १५

६ (दिन) पौष शुक्ल ८ बुध [गीता

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्॥१२॥

६ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १५
पं० २२ पौष] 6 January [भा० पौष १६

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्॥ १३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥ १४॥

८ (दिन) पौष शुक्ल १० शुक्र [गीता

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः ।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥१५॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥

---

८ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १५
पं० २४ पौष] 8 January [भा० पौष १८

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१७॥
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् १८

---

९ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४४ सूर्यास्त ५ । १६
पं० २५ पौष] 9 January [भा० पौष १९

एकादशीव्रत

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

---

१० जनवरी] सूर्योदय ६। ४४ सूर्यास्त ५। १६
पं० २६ पौष] 10 January [भा० पौष २०

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।

कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥

११ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४४ सूर्यास्त ५ । १६

पं० २७ पौष] 11 January [भा० पौष २१

प्रदोष

१२ (दिन) पौष शुक्ल १४ मंगल [गीता

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥२४॥

---

१२ जनवरी] सूर्योदय ६। ४४ सूर्यास्त ५। १६
पं० २८ पौष] 12 January [भा० पौष २२

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥

१३ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । १७
पं० २९ पौष] 13 January [भा० पौष २३

माघस्नानारम्भ

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥३०॥

१५ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । १७
पं० २ माघ] 15 January [आ० पौष २५

मकरसंक्रान्तिजन्य पुण्यकाल

१६ (दिन) माघ कृष्ण २ शनि [गीता

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥३१॥
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ।३२।

---

१६ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । १७

पं० ३ माघ] 16 January [भा० पौष २६

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा

---

१७ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । १८
पं० ४ माघ] 17 January [भा० पौष २७

संकष्टगणेशचतुर्थीव्रत

Total Yeild for the year 1981.
Chalapora.

K Th.

1. Rasol Bhat → 1.08
2. Sona Bhat → 2.00
3. Rahman Bhat → 1.00
4. Amin Bhat → 2.00
5. Ali Bhat → 1.04
6. Kanipora. → 3.00
7. Aziz Khan & Sons → 1.08
8. Mukhdum → 0.05

१८ (दिन) माघ कृष्ण ४ सोम [गीता

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते।३५।
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥

---

१८ जनवरी] सूर्योदय ६।४२ सूर्यास्त ५।१८
पं० ५ माघ] 18 January [भा० पौष २८

२० (दिन) माघ कृष्ण ७ बुध [गीता

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

२० जनवरी] सूर्योदय ६ । ४१ सूर्यास्त ५ । १९

पं० ७ माघ] 20 January [भा० पौष ३०

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥४१॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

---

२१ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४१ सूर्यास्त ५ । १९
पं० ८ माघ] 21 January [भा० माघ १ शक १८८१

गौरी तृतीया के चित्र 2 2 0 ? 6

बड़ा साइज दो प्रदद १२०
छोटा साइज ४० प्रदद १२ प्र
,, ,, ४ प्रदद १२ प्र
,, ,, ४ प्रदद २० प्र
,, ,, ४ प्रदद ८

३२०

२२ (दिन) माघ कृष्ण ९ शुक्र [गीता

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ।४३।
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

---

२२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । २०

पं० ९ माघ] 22 January [भा० माघ २

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥

---

२३ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । २०
पं० १० माघ] 23 January [श्रा० माघ ३

बुद्रू ३७. ८ पा
नदरे १० पा.
सिगारेट ३ पा,
टोमा २ पा.

२२ (दिन) माघ कृष्ण ९ शुक्र [गीता

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः।४३।
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

---

२२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । २०
पं० ९ माघ] 22 January [भा० माघ २

अ० १] माघ कृष्ण १० शनि (दिन) २३

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥

---

२३ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । २०
पं० १० माघ] 23 January [भा० माघ ३

बुद्ध ३० . ८ ग्रा
नदरो १० ग्रा.
सिगरेट ३ ग्रा,
रोमा २ ग्रा.

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः।४७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

---

२४ जनवरी] सूर्योदय ६ । ३९ सूर्यास्त ५ । २१
पं० ११ माघ] 24 January [भा० माघ ४

एकादशीव्रत

ॐ

द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

---

२५ जनवरी] सूर्योदय ६ । ३८ सूर्यास्त ५ । २२
पं० १२ माघ] 25 January [भा० माघ ५

माघ कृष्ण १२ सोम] [प्रदोष

(जे० के० २२००) वि० का०

२६ (दिन) माघ कृष्ण १३ मंगल [गीता

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥ ४ ॥

---

२६ जनवरी] सूर्योदय ६ । ३८ सूर्यास्त ५ । २२

पं० १३ माघ] 26 January [भा० माघ ६

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥

२८ (दिन) माघ कृष्ण ३० गुरु [गीता

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

२८ जनवरी] सूर्योदय ६ । ३७ सूर्यास्त ५ । २३

पं० १५ माघ] 28 January [भा० माघ ८

मकर-अमावास्या

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ७

२९ जनवरी] सूर्योदय ६ । ३६ सूर्यास्त ५ । २४
पं० १६ माघ] 29January [भा० माघ ९

३० (दिन) माघ शुक्ल २ शनि [गीता

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥ ८ ॥

---

३० जनवरी] सूर्योदय ६ । ३५ सूर्यास्त ५ । २५

पं० १७ माघ] 30 January [भा० माघ १०

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ९
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

Shivratri 1983

Phoola Ji :- Rs 35, Kangri, Num
Shakuntla Ji :- Rs10, Kangri, Num

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ।११।
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥

---

१ फरवरी १९६०] सूर्योदय ६ । ३४ सूर्यास्त ५ । २६
पं० १९ माघ] 1 February 1960 [भा० माघ १२

श्रीवसन्तपञ्चमी

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत १४

---

२ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३४ सूर्यास्त ५ । २६
पं० २० माघ] 2 February [भा० माघ १३

मतान्तरसे श्रीवसन्तपञ्चमी

२—

२४ (दिन) माघ शुक्ल ६ बुध [गीता

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥
नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ।१६।

३ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३३ सूर्यास्त ५ । २७

पं० २१ माघ] 3 February [भा० माघ १४

व्रतार्थ अचला सप्तमी

अ० २] माघ शुक्ल ७ गुरु (दिन) ३५

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥१७॥
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥१८॥

---

४ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३२ सूर्यास्त ५ । २८
पं० २२ माघ] 4 February [भा० माघ १५

स्नानार्थं अचला सप्तमी

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥१९॥
न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥

---

५ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३२ सूर्यास्त ५ । २८
पं० २३ माघ] 5 February [भा० माघ १६

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥२१॥
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

३८ (दिन) माघ शुक्ल १० रवि [गीता

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२३॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ।२४।

७ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३० सूर्यास्त ५ । ३०
पं० २५ माघ] 7 February [भा० माघ १८

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२५॥
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥२६॥

८ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३० सूर्यास्त ५ । ३०
पं० २६ माघ] 8 February [भा० माघ १९

एकादशीव्रत

४० (दिन) माघ शुक्ल १२ मंगल [गीता

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२७॥
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२८॥

९ फरवरी] सूर्योदय ६ । २९ सूर्यास्त ५ । ३१
पं० २७ माघ] 9 February [भा० माघ २०

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-
माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥२९॥

१० फरवरी] सूर्योदय ६ । २८ सूर्यास्त ५ । ३२
पं० २८ माघ] 10 February [भा० माघ २१

प्रदोष

४२ (दिन) माघ शुक्ल १४ गुरु [गीता

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ३०
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥

११ फरवरी] सूर्योदय ६ । २८ सूर्यास्त ५ । ३२
पं० २९ माघ] 11 February [भा० माघ २२

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ।३२।
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ।३३।

१२ फरवरी] सूर्योदय ६ । २७ सूर्यास्त ५ । ३३
पं० १ फा० सं० २०१६] 12 February [भा० माघ २३

माघस्नान समाप्त

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ३५

१३ फरवरी] सूर्योदय ६ । २७ सूर्यास्त ५ । ३३
पं० २ फाल्गुन] 13 February [भा० माघ २४

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ।३६।
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥

१४ फरवरी] सूर्योदय ६ । २६ सूर्यास्त ५ । ३४
पं० ३ फाल्गुन] 14 February [भा० माघ २५

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥३८॥
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रृणु ।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ३९

१५ फरवरी] सूर्योदय ६ । २५ सूर्यास्त ५ । ३५
पं० ४ फाल्गुन] 15 February [भा० माघ २६

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्॥४०॥
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ४१

१६ फरवरी] सूर्योदय ६ । २५ सूर्यास्त ५ । ३५
पं० ५ फाल्गुन] 16 February [भा० माघ २७

४८ (दिन) फाल्गुन कृष्ण ५ बुध [गीता

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥४२॥
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥

---

१७ फरवरी] सूर्योदय ६ । २४ सूर्यास्त ५ । ३६
पं० ६ फाल्गुन] 17 February [भा० माघ २८

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ४४
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्

१८ फरवरी] सूर्योदय ६ । २४ सूर्यास्त ५ । ३६
पं० ७ फाल्गुन] 18 February [भा० माघ २९

५० (दिन) फाल्गुन कृष्ण ७ शुक्र [गीता

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥४७॥

१९ फरवरी] सूर्योदय ६ । २३ सूर्यास्त ५ । ३७
पं० ८ फाल्गुन] 19 February [भा० माघ ३०

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥४९॥

२० फरवरी] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ३८
पं० ९ फाल्गुन] 20 February [भा० फा० १ शक १८८१

५२ (दिन) फाल्गुन कृष्ण ९ रवि [गीता

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ५०
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ५१

---

२१ फरवरी] सूर्योदय ६ । २१ सूर्यास्त ५ । ३९

पं० १० फाल्गुन] 21 February [भा० फाल्गुन २

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥५२॥
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥५३॥

---

२२ फरवरी] सूर्योदय ६ । २१ सूर्यास्त ५ । ३९
पं० ११ फाल्गुन] 22 February [भा० फाल्गुन ३

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ५४

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।५५।

२३ फरवरी] सूर्योदय ६ । २० सूर्यास्त ५ । ४०
पं० १२ फाल्गुन] 23 February [भा० फाल्गुन ४

एकादशीव्रत

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५७॥

२४ फरवरी] सूर्योदय ६ । १९ सूर्यास्त ५ । ४१
पं० १३ फाल्गुन] 24 February [भा० फाल्गुन ५

प्रदोष

५६ (दिन) फाल्गुन कृष्ण १४ गुरु [गीता

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५८॥
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥५९॥

२५ फरवरी] सूर्योदय ६।१८ सूर्यास्त ५।४२
पं० १४ फाल्गुन] 25 February [भा० फाल्गुन ६

महाशिवरात्रि

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥६०॥
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।६१।

२६ फरवरी] सूर्योदय ६ । १८ सूर्यास्त ५ । ४२
पं० १५ फाल्गुन] 26 February [भा० फाल्गुन ७

५८ (दिन) फाल्गुन शुक्ल १ शनि [गीता

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

---

२७ फरवरी] सूर्योदय ६ । १७ सूर्यास्त ५ । ४२

पं० १६ फाल्गुन] 27 February [भा० फाल्गुन ८

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥६५॥

२८ फरवरी] सूर्योदय ६ । १६ सूर्यास्त ५ । ४४
पं० १७ फाल्गुन] 28 February [भा० फाल्गुन ९

६० (दिन) फाल्गुन शुक्ल ३ सोम [गीता

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥६७॥

२९ फरवरी] सूर्योदय ६ । १५ सूर्यास्त ५ । ४५

पं० १८ फाल्गुन] 29 February [भा० फाल्गुन १०

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।६८।
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

---

१ मार्च सन् १९६०] सूर्योदय ६ । १४ सूर्यास्त ५।४६
पं० १९ फाल्गुन]1 March 1960[भा० फाल्गुन ११

६२ (दिन) फाल्गुन शुक्ल ५ बुध [गीता

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥

२ मार्च] सूर्योदय ६ । १४ सूर्यास्त ५ । ४६
पं० २० फाल्गुन] 2 March [भा० फाल्गुन १२

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ।७१।
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

---

३ मार्च] सूर्योदय ६ । १३ सूर्यास्त ५ । ४७
पं० २१ फाल्गुन] 3 March [भा० फाल्गुन १३

ॐ

तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥१॥
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥२॥

---

४ मार्च] सूर्योदय ६ । १२ सूर्यास्त ५ । ४८
पं० २२ फाल्गुन] 4 March [भा० फाल्गुन १४

फाल्गुन शुक्ल ७ शुक्र

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३॥
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ४ ॥

---

५ मार्च] सूर्योदय ६ । ११ सूर्यास्त ५ । ४९
पं० २३ फाल्गुन] 5 March [भा० फाल्गुन १५

३—

६६ (दिन) फाल्गुन शुक्ल ९ रवि [गीता

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥

६ मार्च] सूर्योदय ६ । ११ सूर्यास्त ५ । ४९
पं० २४ फाल्गुन] 6 March [भा० फाल्गुन १६

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥७॥
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥८॥

---

७ मार्च] सूर्योदय ६ । १० सूर्यास्त ५ । ५०
पं० २५ फाल्गुन] 7 March [भा० फाल्गुन १७

६८ (दिन) फाल्गुन शुक्ल १० मंगल [गीता

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥९॥
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।१०।

---

८ मार्च] सूर्योदय ६ । ९ सूर्यास्त ५ । ५१

पौ० २६ फाल्गुन] 8 March [भा० फाल्गुन १८

तैलिया १७ सेर ३ पाव [illegible]

वसूल ३०[illegible] बाकी [illegible]

वसूल [illegible]

[illegible] २२ [illegible]

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥११॥
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।१२।

---

९ मार्च] सूर्योदय ६ । ८ सूर्यास्त ५ । ५२
पं० २७ फाल्गुन] 9 March [भा० फाल्गुन १९

एकादशीव्रत

७० (दिन) फाल्गुन शुक्ल १२ गुरु [गीता
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥१३॥
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥१४॥

१० मार्च] सूर्योदय ६ । ८ सूर्यास्त ५ । ५२
पं० २८ फाल्गुन] 10 March [भा० फाल्गुन २०

प्रदोष

शालीकुराडे २ रु० ४ आ
दर्जी क्रि.क० १ रु० ४ आ.

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ।१६।

११ मार्च] सूर्योदय ६ । ७ सूर्यास्त ५ । ५३
पं० २९ फाल्गुन] 11 March [भा० फाल्गुन २१

खण्ड यहाँ ६ ८० ...

७२ (दिन) फाल्गुन शुक्ल १४ शनि [गीता

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥

१२ मार्च] सूर्योदय ६ । ६ सूर्यास्त ५ । ५४
पं० ३० फाल्गुन] 12 March [भा० फाल्गुन २२

होलिकादाह

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥१९॥
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥

१३ मार्च] सूर्योदय ६ । ५ सूर्यास्त ५ । ५५
पं० १ चैत्र २०१६] 13 March [भा० फाल्गुन २३

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥

१४ मार्च] सूर्योदय ६ । ५ सूर्यास्त ५ । ५५
पं० २ चैत्र] 14 March [भा० फाल्गुन २४

वसन्तोत्सव

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ।२४।

१५ मार्च] सूर्योदय ६ । ४ सूर्यास्त ५ । ५६
पं० ३ चैत्र] 15 March [भा० फाल्गुन २५

७६ (दिन) चैत्र कृष्ण ३ बुध [गीता
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ।२५।
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ।२६।

---

१६ मार्च] सूर्योदय ६ । ३ सूर्यास्त ५ । ५७
पं० ४ चैत्र] 16 March [भा० फाल्गुन २६

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥२७॥
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥२८॥

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् २९
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः।३०।

१८ मार्च] सूर्योदय ६ । १ सूर्यास्त ५ । ५९
पं० ६ चैत्र] 18 March [भा० फाल्गुन २८

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥३२॥

८० (दिन) चैत्र कृष्ण ८ रवि [गीता
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ३३
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ।३४।

२० मार्च] सूर्योदय ६ । ० सूर्यास्त ६ । ०
पं० ८ चैत्र] 20 March [भा० फाल्गुन ३०

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥३५॥

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥३६॥

---

२१ मार्च] सूर्योदय ५ । ५९ सूर्यास्त ६ । १
पं० ९ चैत्र] 21 March [भा० चैत्र १ शक १८८२

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ३७
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥३८॥

२२ मार्च] सूर्योदय ५ । ५८ सूर्यास्त ६ । २
पं० १० चैत्र] 22 March [भा० चैत्र २

फस्ट फंड प्रान्त मुनसिफ [illegible]

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥४०॥

२३ मार्च] सूर्योदय ५ । ५८ सूर्यास्त ६ । २
पं० ११ चैत्र] 23 March [भा० चैत्र ३

एकादशीव्रत

८४ (दिन) चैत्र कृष्ण १२ गुरु [गीता

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१॥
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

२४ मार्च] सूर्योदय ५ । ५७ सूर्यास्त ६ । ३
पं० १२ चैत्र] 24 March [भा० चैत्र ४

प्रदोष

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ।४३।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

२५ मार्च] सूर्योदय ५ । ५६ सूर्यास्त ६ । ४

पं० १२ चैत्र] 25 March [भा० चैत्र ५

वारुणीपर्व

ॐ

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥ २ ॥

२६ मार्च] सूर्योदय ५ । ५५ सूर्यास्त ६ । ५
पं० १४ चैत्र] 26 March [भा० चैत्र ६

चैत्र कृष्ण १४ शनि

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ३

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥४॥

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥५॥
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥६॥

२८ मार्च] सूर्योदय ५ । ५४ सूर्यास्त ६ । ६
पं० १६ चैत्र] 28 March [भा० चैत्र ८

नवरात्रारम्भ

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।७।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥८॥

९० (दिन) चैत्र शुक्ल ३ बुध [गीता

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥ ९ ॥
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥१०॥

---

३० मार्च] सूर्योदय ५ । ५२ सूर्यास्त ६ । ८
पं० १८ चैत्र] 30 March [भा० चैत्र १०

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥११॥
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा १२

३१ मार्च] सूर्योदय ५।५२ सूर्यास्त ६।८
पं० १९ चैत्र] 31 March [भा० चैत्र ११

१२ (दिन) चैत्र शुक्ल ५ शुक्र [गीता

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥१३॥
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥१४॥

१ अप्रैल १९६०] सूर्योदय ५। ५१ सूर्यास्त ६। ९
पं० २० चैत्र] 1 April 1960 [भा० चैत्र १२

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥१५॥
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्

९४ (दिन) चैत्र शुक्ल ७ रवि [गीता

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥१७॥
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ।१८।

३ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४९ सूर्यास्त ६ । ११
पं० २२ चैत्र] 3 April [भा० चैत्र १४

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ।१९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः ।२०।

---

४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४८ सूर्यास्त ६ । १२
पं० २३ चैत्र] 4 April [भा० चैत्र १५

अशोकाष्टमी

९६ (दिन) चैत्र शुक्ल ९ मंगल [गीता

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।२१।
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ।२२।

५ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४८ सूर्यास्त ६ । १२
पं० २४ चैत्र] 5 April [भा० चैत्र १६

श्रीरामनवमी

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥२३॥
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥२४॥

६ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४७ सूर्यास्त ६ । १३
पं० २५ चैत्र] 6 April [भा० चैत्र १७

९८ (दिन) चैत्र शुक्ल ११ गुरु [गीता

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥२५॥
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति।२६।

७ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४६ सूर्यास्त ६ । १४
पं० २६ चैत्र] 7 April [भा० चैत्र १८

एकादशीव्रत

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥२७॥
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥२८॥

---

८ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४५ सूर्यास्त ६ । १५
पं० २७ चैत्र] 8 April [भा० चैत्र १९

एकादशीव्रत

१०० (दिन) चैत्र शुक्ल १३ शनि [गीता

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ।२९।
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥३०॥

९ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४५ सूर्यास्त ६ । १५
पं० २८ चैत्र] 9 April [भा० चैत्र २०

प्रदोष

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ।३१।
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे ।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ३२

१० अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४४ सूर्यास्त ६ । १६
पं० २९ चैत्र] 10 April [भा० चैत्र २१

१०२ (दिन) चैत्र शुक्ल १५ सोम [गीता

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥३३॥
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥३४॥

११ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४३ सूर्यास्त ६ । १७
पं० ३० चैत्र] 11 April [भा० चैत्र २२

वैशाखस्नानारम्भ

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव ।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥३५॥
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥३६॥

१२ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ६ । १८
पं० ३१ चैत्र] 12 April [भा० चैत्र २३

१०४ (दिन) वैशाख कृष्ण २ बुध [गीता

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा॥३७॥
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।३८।

१३ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ६ । १८
पं० १ वैशाख सं० २०१७] 13 April [भा० चैत्र २४

मेष-संक्रान्ति

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ३९
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ४०

---

१४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४१ सूर्यास्त ६ । १९
पं० २ वैशाख] 14 April [भा० चैत्र २५

१०४ (दिन) वैशाख कृष्ण २ बुध [गीता
यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥३७॥
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।३८।

१३ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ६ । १८
पं० १ वैशाख सं० २०१७] 13 April [भा० चैत्र २४

मेष-संक्रान्ति

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ३९
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ४०

१४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४१ सूर्यास्त ६ । १९
पं० २ वैशाख] 14 April [भा० चैत्र २५

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥४१॥
तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥४२॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यास-योगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥



पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ २ ॥

---

१६ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३९ सूर्यास्त ६ । २१
पं० ४ वैशाख] 16 April [भा० चैत्र २७

वैशाख कृष्ण ५ शनि

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥३॥
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥४॥

---

१७ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३८ सूर्यास्त ६ । २२
पं० ५ वैशाख] 17 April [भा० चैत्र २८

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति॥५॥
संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥

१८ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३८ सूर्यास्त ६ । २२
पं० ६ वैशाख] 18 April [भा० चैत्र २९

११० (दिन) वैशाख कृष्ण ८ मंगल [गीता

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ ७ ॥
नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्

१९ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३७ सूर्यास्त ६ । २३
पं० ७ वैशाख] 19 April [भा० चैत्र ३०

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ ९ ॥
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥१०॥

---

२० अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३७ सूर्यास्त ६ । २३
पं० ८ वैशाख] 20 April [भा० चैत्र ३१

११२ (दिन) वैशाख कृष्ण ११ गुरु [गीता

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥११॥
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥१२॥

२१ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३६ सूर्यास्त ६ । २४
पं० ९ वैशाख] 21 April [भा० वैशाख १ शक १८८२

एकादशीव्रत

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥१३॥
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥

२२ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । २५
पं० १० वैशाख] 22 April [भा० वैशाख २

एकादशीव्रत

११४ (दिन) वैशाख कृष्ण १३ शनि [गीता

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५॥
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥१६॥

---

२३ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । २५

पं० ११ वैशाख] 23 April [भा० वैशाख ३

प्रदोष

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥१७॥
विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥१८॥

११६ (दिन) वैशाख कृष्ण ३० सोम [गीता

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥१९॥
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥२०॥

---

२५ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३३ सूर्यास्त ६ । २७

पं० १३ वैशाख] 25 April [भा० वैशाख ५

सोमवती अमावास्या

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् ।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥२१॥
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥२२॥

---

२६ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३२ सूर्यास्त ६ । २७
पं० १४ वैशाख] 26 April [भा० वैशाख ६

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥२३॥
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥२५॥
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥२६॥

२८ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३२ सूर्यास्त ६ । २८
पं० १६ वैशाख] 28 April [भा० वैशाख ८

अक्षयतृतीया

१२० (दिन) वैशाख शुक्ल ३ शुक्र [गीता

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ २८ ॥

२९ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३१ सूर्यास्त ६ । २९
पं० १७ वैशाख] 29 April [भा० वैशाख ९

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यास-योगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥१॥
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ॥२॥

---

१ मई १९६०] सूर्योदय ५ । ३० सूर्यास्त ६ । ३०
पं० १९ वैशाख] 1 May 1960 [भा० वैशाख ११

वैशाख शुक्ल ५ रवि

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥३॥
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥

२ मई] सूर्योदय ५ । २९ सूर्यास्त ६ । ३१
पं० २० वैशाख] 2 May [भा० वैशाख १२

१२४ (दिन) वैशाख शुक्ल ७ मंगल [गीता

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥५॥
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥६॥

---

३ मई] सूर्योदय ५ । २८ सूर्यास्त ६ । ३२
पं० २१ वैशाख] 3 May [भा० वैशाख १३

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥७॥
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥८॥

४ मई] सूर्योदय ५ । २८ सूर्यास्त ६ । ३२
पं० २२ वैशाख] 4 May [भा० वैशाख १४

१२६ (दिन) वैशाख शुक्ल ९ गुरु [गीता

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥९॥
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥१०॥

---

५ मई] सूर्योदय ५ । २७ सूर्यास्त ६ । ३३
पं० २३ वैशाख] 5 May [भा० वैशाख १५

सीतानवमी

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ११
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥१२॥

६ मई] सूर्योदय ५ । २७ सूर्यास्त ६ । ३३
पं० २४ वैशाख] 6 May [भा० वैशाख १६

१२८ (दिन) वैशाख शुक्ल ११ शनि [गीता

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्॥१३॥
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः॥१४॥

७ मई] सूर्योदय ५ । २६ सूर्यास्त ६ । ३४

पं० २५ वैशाख] 7 May [भा० वैशाख १७

एकादशीव्रत

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥१५॥
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः ।
न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥१६॥

---

८ मई] सूर्योदय ५ । २५ सूर्यास्त ६ । ३५
पं० २६ वैशाख] 8 May [भा० वैशाख १८

प्रदोष

५—

१३० (दिन) वैशाख शुक्ल १२ सोम [गीता

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥१७॥
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ।१८।

९ मई] सूर्योदय ५ । २५ सूर्यास्त ६ । ३५
पं० २७ वैशाख] 9 May [भा० वैशाख १९

श्रीनृसिंहजयन्ती

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥१९॥
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥२०॥

---

१० मई] सूर्योदय ५ । २४ सूर्यास्त ६ । ३६
पं० २८ वैशाख] 10 May [भा० वैशाख २०

१३२ (दिन) वैशाख शुक्ल १५ बुध [गीता

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥२१॥
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते॥२२॥

११ मई] सूर्योदय ५ । २३ सूर्यास्त ६ । ३७
पं० २९ वैशाख] 11 May [भा० वैशाख २१

वैशाखस्नानसमाप्त

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ।२३।
संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥२४॥

१२ मई] सूर्योदय ५ । २३ सूर्यास्त ६ । ३७
पं० ३० वैशाख] 12 May [भा० वैशाख २२

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्२५
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥२६॥

---

१३ मई] सूर्योदय ५ । २२ सूर्यास्त ६ । ३८
पं० ३१ वैशाख] 13 May [भा० वैशाख २३

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥२८॥

---

१४ मई] सूर्योदय ५ । २२ सूर्यास्त ६ । ३८
पं० १ ज्येष्ठ सं० २०१७] 14 May [भा० वैशाख २४

१३६ (दिन) ज्येष्ठ कृष्ण ५ रवि [गीता

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥२९॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥३०॥

१५ मई] सूर्योदय ५ । २१ सूर्यास्त ६ । ३९
पं० २ ज्येष्ठ] 15 May [भा० वैशाख २५

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥३२॥

---

१६ मई] सूर्योदय ५ । २० सूर्यास्त ६ । ४०
पं० ३ ज्येष्ठ] 16 May [आ० वैशाख २६

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥३४॥

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥३५॥
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥३६॥

१८ मई] सूर्योदय ५ । १९ सूर्यास्त ६ । ४१
पं० ५ ज्येष्ठ] 18 May [भा० वैशाख २८

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ३७
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥३८॥

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः ।
त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥३९॥

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति४०

१४२ (दिन) ज्येष्ठ कृष्ण ११ शनि [गीता

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥४१॥
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥४२॥

२१ मई] सूर्योदय ५ । १८ सूर्यास्त ६ । ४२
पं० ८ ज्येष्ठ] 21 May [भा० वैशाख ३१

एकादशीव्रत

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥३॥
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥

---

२६ मई] सूर्योदय ५। १७ सूर्यास्त ६। ४३
पं० १३ ज्येष्ठ] 26 May [भा० ज्येष्ठ ५

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥५॥
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ ६ ॥

मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ ७॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥ ८॥

१५० (दिन) ज्येष्ठ शुक्ल ४ रवि [गीता
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥
बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।१०।

२९ मई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० १६ ज्येष्ठ] 29 May [भा० ज्येष्ठ ८

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥१२॥

३० मई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० १७ ज्येष्ठ] 30 May [भा० ज्येष्ठ ९

१५२ (दिन) ज्येष्ठ शुक्ल ६ मंगल [गीता

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्।१३।
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥१४॥

---

३१ मई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० १८ ज्येष्ठ] 31 May [भा० ज्येष्ठ १०

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१५॥
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥१६॥

---

१ जून सन् १९६०] सूर्योदय ५। १६ सूर्यास्त ६। ४४
पं० १९ ज्येष्ठ] 1 June 1960 [भा० ज्येष्ठ ११

१५४ (दिन) ज्येष्ठ शुक्ल ८ गुरु [गीता

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः १७
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्

---

२ जून] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५

पं० २० ज्येष्ठ] 2 June [भा० ज्येष्ठ १२

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१९।
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ।२०।

---

३ जून] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० २१ ज्येष्ठ] 3 June [भा० ज्येष्ठ १३

१५६ (दिन) ज्येष्ठ शुक्ल १० शनि [गीता

योयो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् २१
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् २२

---

४ जून] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० २२ ज्येष्ठ] 4 June [भा० ज्येष्ठ १४

गङ्गादशहरा

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि २३
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

५ जून] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० २३ ज्येष्ठ] 5 June [भा० ज्येष्ठ १५

एकादशीव्रत

१५८ (दिन) ज्येष्ठ शुक्ल १२ सोम [गीता

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् २५
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ।२६।

६ जून] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० २४ ज्येष्ठ] 6 June [भा० ज्येष्ठ १६

एकादशीव्रत

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥२८॥

---

७ जून] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० २५ ज्येष्ठ] 7 June [भा० ज्येष्ठ १७

प्रदोष

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्२९
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः।३०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

ॐ

अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥१॥
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥२॥

९ जून] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० २७ ज्येष्ठ] 9 June [भा० ज्येष्ठ १९

ज्येष्ठ शुक्ल १५ गुरु

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥३॥
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥४॥

---

१० जून] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० २८ ज्येष्ठ] 10 June [भा० ज्येष्ठ २०

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ।५।
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥६॥

११ जून] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० २९ ज्येष्ठ] 11 June [भा० ज्येष्ठ २१

१६४ (दिन) आषाढ़ कृष्ण ३ रवि [गीता

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥७॥
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८॥

१२ जून] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० ३० ज्येष्ठ] 12 June [भा० ज्येष्ठ २२

कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ९ ॥

१३ जून] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० ३१ ज्येष्ठ] 13 June [भा० ज्येष्ठ २३

१६६ (दिन) आषाढ़ कृष्ण ५ मंगल [गीता

प्रयाणकाले मनसाचलेन
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्
स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥१०॥

१४ जून] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० १ आषाढ़ सं० २०१७] 14 June [भा० ज्येष्ठ २४

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥

१५ जून] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० २ आषाढ़] 15 June [भा० ज्येष्ठ २५

१६८ (दिन) आषाढ़ कृष्ण ८ गुरु [गीता

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।१३।

१६ जून] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० ३ आषाढ़] 16 June [भा० ज्येष्ठ २६

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ।१४।
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः १५

१७ जून] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० ४ आषाढ़] 17 June [भा० ज्येष्ठ २७

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥१६॥
सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ।१७।

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥१९॥

---

१९ जून] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ४९
पं० ६ आषाढ] 19 June [भा० ज्येष्ठ २९

एकादशीव्रत

१७२ (दिन) आषाढ़ कृष्ण १२ सोम [गीता

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥२०॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥२१॥

---

२० जून] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ४९
पं० ७ आषाढ़] 20 June [भा० ज्येष्ठ ३०

एकादशीव्रत

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ।२२।
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ॥२३॥

---

२१ जून] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ४९
पं० ८ आषाढ़] 21 June [आ० ज्येष्ठ ३१

प्रदोष

१७४ (दिन) आषाढ़ कृष्ण १४ बुध [गीता

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥२४॥
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥२५॥

२२ जून] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ४९

पं० ९ आषाढ] 22 June [भा० आषाढ़ १ शक १८८२

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥२६॥
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥२७॥

२३ जून] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ४९
पं० १० आषाढ] 23 June [भा० आषाढ २

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव
दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् ।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा
योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् १
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥ २ ॥

२५ जून] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० १२ आषाढ़] 25 June [भा० आषाढ ४

आषाढ शुक्ल १ शनि

१७८ (दिन) आषाढ़ शुक्ल २ रवि [गीता

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः॥ ४ ॥

२६ जून] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० १३ आषाढ] 26 June [भा० आषाढ ५

श्रीजगदीशरथयात्रा

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥५॥
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥६॥

---

२७ जून] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० १४ आषाढ़] 27 June [भा० आषाढ़ ६

१८० (दिन) आषाढ़ शुक्ल ४ मंगल [गीता

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥८॥

२८ जून] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० १५ आषाढ़] 28 June [भा० आषाढ़ ७

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥१०॥

२९ जून] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० १६ आषाढ] 29 June [भा० आषाढ ८

१८२ (दिन) आषाढ़ शुक्ल ६ गुरु [गीता

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥११॥
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः।१२।

३० जून] सूर्योदय ५। १३ सूर्यास्त ६। ४७
पं० १७ आषाढ] 30 June [भा० आषाढ ९

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ।१३।
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते।१४।

---

१८४ (दिन) आषाढ़ शुक्ल ८ शनि [गीता

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥१५॥
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥१६॥

---

२ जुलाई] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ४६

पं० १९ आषाढ़] 2 July [भा० आषाढ़ ११

हसन भुट खजान्ची २५ त्रिक
प्रेम भुट ,,,, १ख २ त्रि०
चौकीदार ,,,, १ख ३ त्रि.
७ त्रि.

गुलाम हसैं १ख

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥१७॥
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥१८॥

---

३ जुलाई] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० २० आषाढ़] 3 July [भा० आषाढ़ १२

प्रत्नसी ९९०२०

१८६ (दिन) आषाढ़ शुक्ल १० सोम [गीता

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥१९॥
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥२०॥

४ जुलाई] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० २१ आषाढ़] 4 July [भा० आषाढ़ १३

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना
गतागतं कामकामा लभन्ते ॥ २१ ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।२२।

५ जुलाई] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० २२ आषाढ] 5 July [भा० आषा १४

हरिशयनी एकादशीव्रत

१८८ (दिन) आषाढ़ शुक्ल १२ बुध [गीता

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ।२३।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते।२४।

---

६ जुलाई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५

पं० २३ आषाढ़] 6 July [भा० आषाढ़ १५

प्रदोष

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥२६॥

---

७ जुलाई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० २४ आषाढ] 7 July [भा० आषाढ १६

१९० (दिन) आषाढ शुक्ल १५ शुक्र [गीता

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥२७॥
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि।२८।

८ जुलाई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० २५ आषाढ] 8 July [भा० आषाढ १७

गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्२९
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ३०

---

९ जुलाई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० २६ आषाढ़] 9 July [भा० आषाढ़ १८

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥३१॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्

१० जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० २७ आषाढ] 10 July [भा० आषाढ १९

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥३३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

---

१९२ (दिन) श्रावण कृष्ण २ रवि [गीता

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥३१॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्

१० जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० २७ आषाढ] 10 July [भा० आषाढ १९

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ।३३।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराज-गुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

---

११ जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० २८ आषाढ] 11 July [भा० आषाढ २०

ॐ

दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ २ ॥

१२ जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० २९ आषाढ] 12 July [आ० आषाढ २१

श्रावण कृष्ण ४ मंगल

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥ ४ ॥

१३ जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० ३० आषाढ] 13 July [भा० आषाढ २२

१९६ (दिन) श्रावण कृष्ण ६ गुरु [गीता

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ ५॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः। ६।

१४ जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० ३१ आषाढ] 14 July [भा० आषाढ २३

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥८॥

१५ जुलाई] सूर्योदय ५ । १७ सूर्यास्त ६ । ४३
पं० ३२ आषाढ़] 15 July [भा० आषाढ २४

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥९॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ।११।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥१२॥

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥१४॥

१८ जुलाई] सूर्योदय ५ । १७ सूर्यास्त ६ । ४३
पं० ३ श्रावण] 18 July [मा० आषाढ़ २७

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि॥

१९ जुलाई] सूर्योदय ५। १८ सूर्यास्त ६ । ४२
पं० ४ श्रावण] 19 July [भा० आषाढ़ २८

एकादशीव्रत

२०२ (दिन) श्रावण कृष्ण १२ बुध [गीता

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया।१७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् १८

---

२० जुलाई] सूर्योदय ५ । १८ सूर्यास्त ६ । ४२
पं० ५ श्रावण] 20 July [भा० आषाढ़ २९

प्रदोष

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे १९
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥

२१ जुलाई] सूर्योदय ५ । १८ सूर्यास्त ६ । ४२
पं० ६ श्रावण] 21 July [श्रा० आषाढ ३०

२०४ (दिन) श्रावण कृष्ण १४ शुक्र [गीता

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ।२२।

२२ जुलाई] सूर्योदय ५ । १८ सूर्यास्त ६ । ४२
पं० ७ श्रावण] 22 July [भा० आषाढ़ ३१

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥२४॥

२३ जुलाई] सूर्योदय ५ । १९ सूर्यास्त ६ । ४१
पं० ८ श्रावण] 23 July [भा० श्रावण १ शक १८८२

२०६ (दिन) श्रावण शुक्ल १ रवि [गीता

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ।२५।
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ।२६।

२४ जुलाई] सूर्योदय ५ । १९ सूर्यास्त ६ । ४१
पं० ९ श्रावण] 24 July [भा० श्रावण २

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी । ३१ ।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् । ३२ ।

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् ।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥२९॥
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्॥३०॥

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी। ३१।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ।३२।

२१० (दिन) श्रावण शुक्ल ५ गुरु [गीता
अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥३३॥
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा

२८ जुलाई] सूर्योदय ५ । २२ सूर्यास्त ६ । ३८
पं० १३ श्रावण] 28 July [भा० श्रावण ६

नागपञ्चमी

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः॥३५॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्॥

२९ जुलाई] सूर्योदय ५ । २२ सूर्यास्त ६ । ३८
पं० १४ श्रावण] 29 July [भा० श्रावण ७

२१२ (दिन) श्रावण शुक्ल ७ शनि [गीता

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः॥३७॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्।३८।

३० जुलाई] सूर्योदय ५ । २३ सूर्यास्त ६ । ३७
पं० १५ श्रावण] 30 July [भा० श्रावण ८

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ३९
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥

---

३१ जुलाई] सूर्योदय ५। २३ सूर्यास्त ६। ३७
पं० १६ श्रावण] 31 July [भा० श्रावण ९

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ।४२।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो
नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ॐ

एकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ १ ॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्। २।

---

२ अगस्त] सूर्योदय ५ । २५ सूर्यास्त ६ । ३५
पं० १८ श्रावण] 2 August [भा० श्रावण ११

श्रावण शुक्ल १० मंगल

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर ।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥

---

३ अगस्त] सूर्योदय ५ । २५ सूर्यास्त ६ । ३५
पं० १९ श्रावण] 3 August [भा० श्रावण १२

एकादशीव्रत

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥५॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥ ६ ॥

४ अगस्त] सूर्योदय ५ । २६ सूर्यास्त ६ । ३४

पं० २० श्रावण] 4 August [भा० श्रावण १३

प्रदोष

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमिच्छसि ॥७॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥८॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥१०॥

---

२२० (दिन) श्रावण शुक्ल १५ रवि [गीता

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥११॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥

७ अगस्त] सूर्योदय ५ । २८ सूर्यास्त ६ । ३२
पं० २३ श्रावण] 7 August [भा० श्रावण १६

श्रावणी, रक्षाबन्धन

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥१३॥
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥१४॥

---

८ अगस्त] सूर्योदय ५ । २८ सूर्यास्त ६ । ३२
पं० २४ श्रावण] ४ August [भा० श्रावण १७

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान् ।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥१५॥

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥१६॥

१० अगस्त] सूर्योदय ५ । २९ सूर्यास्त ६ । ३१
पं० २६ श्रावण] 10 August [आ० श्रावण १९

बहुला चतुर्थीव्रत

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता-
द्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥१७॥

---

११ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३० सूर्यास्त ६ । ३०
पं० २७ श्रावण] 11 August [भा० श्रावण २०

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वंमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥१८॥

---

१२ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३० सूर्यास्त ६ । ३०

पं० २८ श्रावण] 12 August [भा० श्रावण २१

हलषष्ठी

८—

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं
स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥१९॥

१३ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३१ सूर्यास्त ६ । २९
पं० २९ श्रावण] 13 August [भा० श्रावण २२

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् । २० ।

१४ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३२ सूर्यास्त ६ । २८
पं० ३० श्रावण] 14 August [भा० श्रावण २३

जन्माष्टमी

२२८ (दिन) भाद्रपद कृष्ण ९ सोम [गीता

अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः२१

१५ अगस्त] सूर्योदय ५। ३२ सूर्यास्त ६ । २८
पं० ३१ श्रावण] 15 August [भा० श्रावण २४

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च ।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥२२॥

२३० (दिन) भाद्रपद कृष्ण ११ बुध [गीता

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं
महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ।२३।

---

१७ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३३ सूर्यास्त ६ । २७
पं० २ भाद्रपद] 17 August [भा० श्रावण २६

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं
व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा
धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो॥२४॥

---

१८ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३४ सूर्यास्त ६ । २६
पं० ३ भाद्रपद] 18 August [भा० श्रावण २७

एकादशीव्रत

२३२ (दिन) भाद्रपद कृष्ण १२ शुक्र [गीता

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ।
दिशो न जाने न लभे च शर्म
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥२५॥

---

१९ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । २५
पं० ४ भाद्रपद] 19 August [भा० श्रावण २८

प्रदोष

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः
सर्वे सहैवावनिपालसंघैः ।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥२६॥

---

२० अगस्त] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । २५
पं० ५ भाद्रपद] 20 August [भा० श्रावण २९

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति
दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु
संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥२७॥

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ।२८।

२२ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३६ सूर्यास्त ६ । २४
पं० ७ भाद्रपद] 22 August [भा० श्रावण ३१

कुशोत्पाटनी, सोमवती अमावास्या

२३६ (दिन) भाद्रपद शुक्ल १ मंगल [गीता

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोका-
स्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥२९॥

२३ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३७ सूर्यास्त ६ । २३

पं०८ भाद्रपद] 23 August [भा० भाद्रपद १ शक १८८२

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ता-
ल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं
भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ।३०।

२३८ (दिन) भाद्रपद शुक्ल ३ गुरु [गीता

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं
न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥

२५ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३९ सूर्यास्त ६ । २१

पं० १० भाद्रपद] 25 August [भा० भाद्रपद ३

हरतालिकाव्रत

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥३२॥

२४० (दिन) भाद्रपद शुक्ल ५ शनि [गीता

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥३३॥

---

२७ अगस्त] सूर्योदय ५ । ४० सूर्यास्त ६ । २०
पं० १२ भाद्रपद] 27 August [भा० भाद्रपद ५

ऋषिपञ्चमीव्रत

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥३४॥

२८ अगस्त] सूर्योदय ५।४१ सूर्यास्त ६। १९
पं० १३ भाद्रपद] 28 August [भा० भाद्रपद ६

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी ।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं
सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥३५॥

२९ अगस्त] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ६ । १८
पं० १४ भाद्रपद] 29 August [भा० भाद्रपद ७

श्रीराधाष्टमी

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥३६॥

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥३७॥

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥३८॥

---

१ सितम्बर १९६०] सूर्योदय ५।४४ सूर्यास्त ६।१६
पं० १७ भाद्र०] 1 September 1960 [भा० भाद्र० १०

एकादशीव्रत

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३९॥

---

२ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४५ सूर्यास्त ६ । १५
पं० १८ भाद्रपद] 2 September [भा० भाद्रपद ११

एकादशीव्रत

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥४०॥

३ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४५ सूर्यास्त ६ । १५
पं० १९ भाद्रपद] 3 September [भा० भाद्रपद १२

प्रदोष

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥४१॥

४ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४७ सूर्यास्त ६ । १३
पं० २० भाद्रपद] 4 September [भा० भाद्रपद १३

अनन्तचतुर्दशीव्रत

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥४२॥

---

५ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४८ सूर्यास्त ६ । १२

पं० २१ भाद्रपद]5 September [भा० भाद्रपद १४

महालयारम्भ

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥

६ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४८ सूर्यास्त ६ । १२
पं० २२ भाद्रपद]6 September [भा० भाद्रपद १५

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥४४॥

---

७ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४९ सूर्यास्त ६ । ११
पं० २३ भाद्रपद] 7 September [भा० भाद्रपद १६

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देव रूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥४५॥

८ सितम्बर] सूर्योदय ५। ५० सूर्यास्त ६। १०

पं० २४ भाद्रपद] 8 September[भा० भाद्रपद १७

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त-
मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥४६॥

---

९ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५० सूर्यास्त ६ । १०

पं० २५ भाद्रपद] 9 September [भा० भाद्रपद १८

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥४७॥

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानै-
र्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः ।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके
द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥४८॥

---

११ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५२ सूर्यास्त ६ । ८
पं० २७भाद्रपद]11 September [भा० भाद्रपद२०

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥४९॥

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ।
आश्वासयामास च भीतमेनं
भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥५०॥

१३ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५३ सूर्यास्त ६ । ७
पं० २९ भाद्रपद] 13 September [भा० भाद्रपद २२

जीवत्पुत्रिकाव्रत

९—

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः॥५१॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः॥५२॥

---

१४ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५४ सूर्यास्त ६ । ६
पं० ३० भाद्रपद] 14 September [भा० भाद्रपद २३

मातृनवमी

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः॥ १॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः॥ २॥

---

१७ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५६ सूर्यास्त ६ । ४
पं० २ आश्विन] 17 September [भा० भाद्रपद २६

आश्विन कृष्ण १२ शनि

२६० (दिन) आश्विन कृष्ण ११ शुक्र [गीता

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥५५॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

---

१६ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५५ सूर्यास्त ६ । ५

पं०१आ०सं०२०१७]16September[भा०भाद्र०२५

एकादशीव्रत

एकादशीव्रत २८-५-६

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥ २ ॥

१७ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५६ सूर्यास्त ६ । ४
पं० २ आश्विन] 17 September [भा० भाद्रपद २६

आश्विन कृष्ण १२ शनि

२६२ (दिन) आश्विन कृष्ण १२ रवि [गीता

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥ ३ ॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥ ४ ॥

---

१८ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५७ सूर्यास्त ६ । ३

पं० ३ आश्विन] 18 September [भा० भाद्रपद २७

प्रदोष

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ ६ ॥

---

१९ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५८ सूर्यास्त ६ । २

पं० ४ आश्विन] 19 September [भा० भाद्रपद २८

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥ ७ ॥
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥ ८ ॥

२० सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५८ सूर्यास्त ६ । २
पं० ५ आश्विन] 20 September [भा० भाद्रपद २९

पितृविसर्जन

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥ ९ ॥
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥

---

२१ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५९ सूर्यास्त ६ । १
पं० ६ आश्विन] 21 September [भा० भाद्रपद ३०

नवरात्रारम्भ

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥११॥
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् १२

२२ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ५९ सूर्यास्त ६ । १
पं०७ आश्विन] 22 September [भा०भाद्रपद ३१

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥

---

२३ सितम्बर] सूर्योदय ६ । ० सूर्यास्त ६ । ०

पं०८आश्विन] 23September [भा० आ० १शक१८८२

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१५॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥१६॥

योन हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः १७
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥

---

२५ सितम्बर] सूर्योदय ६ । २ सूर्यास्त ५ । ५८
पं० १० आश्विन] 25 September [भा० आश्विन ३

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥१९॥
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।२०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

ॐ

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥ १ ॥
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ २ ॥

२७ सितम्बर] सूर्योदय ६ । ३ सूर्यास्त ५ । ५७
पं० १२ आश्विन] 27 September [भा० आश्विन ५

आश्विन शुक्ल ७ मंगल

२७२ (दिन) आश्विन शुक्ल ८ बुध [गीता

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥ ३ ॥
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥

२८ सितम्बर] सूर्योदय ६ । ४ सूर्यास्त ५ । ५६
पं० १२ आश्विन] 28 September [भा० आश्विन ६

दुर्गाष्टमी

महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः॥ ५॥
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम्॥ ६॥

---

२९ सितम्बर] सूर्योदय ६।५ सूर्यास्त ५।५५
पं० १४ आश्विन]29 September [भा० आश्विन ७

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥

३० सितम्बर] सूर्योदय ६।५ सूर्यास्त ५।५५
पं० १५ आश्विन] 30 September [भा० आश्विन ८

विजयादशमी

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥९॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥१०॥

---

१ अक्टूबर १९६०] सूर्योदय ६ । ६ सूर्यास्त ५ । ५४
पं० १६ आश्विन] 1 October 1960 [भा० आश्विन ९

एकादशीव्रत

२७६ (दिन) आश्विन शुक्ल १२ रवि [गीता

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥११॥
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥१२॥

---

२ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ७ सूर्यास्त ५ । ५३
पं० १७ आश्विन] 2 October [भा० आश्विन १०

प्रदोष

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥१४॥

---

३ अक्टूबर] सूर्योदय ६। ८ सूर्यास्त ५। ५२
पं० १८ आश्विन] 3 October [भा० आश्विन ११

२७८ (दिन) आश्विन शुक्ल १५ मंगल [गीता

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् १५
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥१६॥

४ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ९ सूर्यास्त ५ । ५१
पं० १९ आश्विन] 4 October [भा० आश्विन १२

शरत्पूर्णिमा] [कार्तिकस्नानारम्भ

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥१७॥
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद् विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥१८॥

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ।१९।
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥२०॥

६ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १० सूर्यास्त ५ । ५०
पं० २१ आश्विन] 6 October [भा० आश्विन १४

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥२१॥
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ॥२२॥

---

२८२ (दिन) कार्तिक कृष्ण ४ शनि [गीता

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥२३॥
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥२४॥

८ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १२ सूर्यास्त ५ । ४८
पं० २३ आश्विन] 8 October [भा० आश्विन १६

करकचतुर्थी

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः॥२५॥
यावत्संजायते किञ्चित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम्।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥२६॥

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति२७
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् २८

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥२९॥
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥३०॥

२८६ (दिन) कार्तिक कृष्ण ७ बुध [गीता

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ।३१।
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥३२॥

१२ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १५ सूर्यास्त ५ । ४५
पं० २७ आश्विन] 12 October [भा० आश्विन २०

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३३॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा ।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

ॐ

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ।१।
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥२॥

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥३॥
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥४॥

---

१५ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १७ सूर्यास्त ५ । ४३
पं० ३० आश्विन] 15 October [भा० आश्विन २३

१०—
प्रकाशनाथ [illegible]

---

२९० (दिन) कार्तिक कृष्ण ११ रवि [गीता

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ ५॥
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥ ६॥

---

१६ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १८ सूर्यास्त ५ । ४२
पं० ३१ आश्विन] 16 October [भा० आश्विन २४

एकादशीव्रत

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥७॥
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥८॥

१७ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १९ सूर्यास्त ५ । ४१

पं० १ कार्तिक सं० २०१७] 17 October [भा० आ० २५

प्रदोष

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत ।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥

---

१८ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १९ सूर्यास्त ५ । ४१
पं० २ कार्तिक] 18 October [भा० आश्विन २६

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते ।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥११॥
लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा ।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१२॥

१९ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २० सूर्यास्त ५ । ४०
पं० ३ कार्तिक] 19 October [भा० आश्विन २७

दीपावली

२९४ (दिन) कार्तिक कृष्ण ३० गुरु [गीता

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥१३॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् ।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥१४॥

---

२० अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २१ सूर्यास्त ५ । ३९
दं० ४ कार्तिक] 20 October [भा० आश्विन २८

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥१५॥
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१६॥

---

२१ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ३८
पं० ५ कार्तिक] 21 October [भा० आश्विन २९

अन्नकूट

२९६ (दिन) कार्तिक शुक्ल २ शनि [गीता

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च ।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥१७॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः १८

---

२२ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ३८
पं० ६ कार्तिक] 22 October [भा० आश्विन ३०

भ्रातृद्वितीया

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति।१९।
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥२०॥

२३ अक्टूबर] सूर्योदय ६। २२ सूर्यास्त ५। ३७
पं० ७कार्तिक]23 October[भा० कार्तिक १ सक १८८२

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥२१॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥२२॥

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते ।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥२३॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः २४

२५ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २४ सूर्यास्त ५ । ३६
पं० ९ कार्तिक] 25 October [भा० कार्तिक ३

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥२५॥
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥२६॥

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च।२७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

---

२७ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २५ सूर्यास्त ५ । ३५
पं० ११ कार्तिक] 27 October [भा० कार्तिक ५

गोपाष्टमी

ॐ

पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ १ ॥

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥

२८ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २६ सूर्यास्त ५ । ३४
पं० १२ कार्तिक] 28 October [भा० कार्तिक ६

कार्तिक शुक्ल ९ शुक्र] [अक्षयनवमी

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल-
मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३ ॥

२९ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २७ सूर्यास्त ५ । ३३
पं० १३ कार्तिक] 29 October [भा० कार्तिक ७

३०४ (दिन) कार्तिक शुक्ल ११ रवि [गीता

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥

---

३० अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २७ सूर्यास्त ५ । ३३

पं० १४ कार्तिक] 30 October [भा० कार्तिक ८

प्रबोधिनी एकादशीव्रत

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ५ ॥

३१ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । २८ सूर्यास्त ५ । ३२

५० १५ कार्तिक] 31 October [भा० कार्तिक ९

प्रदोष

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ ६ ॥
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥

---

१ नवम्बर १९६०] सूर्योदय ६।२९ सूर्यास्त ५।३१
पं० १६ कार्तिक] 1 November 1960 [भा० कार्तिक १०

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥८॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥९॥

३०८ (दिन) कार्तिक शुक्ल १५ गुरु [गीता
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१०॥
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ।११।

३ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३० सूर्यास्त ५ । ३०
पं० १८ कार्तिक] 3 November [भा० कार्तिक १२

कार्तिकी पूर्णिमा

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् १२
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः॥

४ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३० सूर्यास्त ५ । ३०
पं० १९ कार्तिक] 4 November [भा० कार्तिक १३

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।१४।
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥१५॥

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते॥१६॥
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१७॥

---

६ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३२ सूर्यास्त ५ । २८
पं० २१ कार्तिक] 6 November [भा० कार्तिक १५

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥१८॥
यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥१९॥

७ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३२ सूर्यास्त ५ । २८
पं० २२ कार्तिक] 7 November [भा० कार्तिक १६

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत २०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

ॐ

षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ २ ॥

९ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३४ सूर्यास्त ५ । २६
पं० २४ कार्तिक] 9 November [भा० कार्तिक १८

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ बुध

प्रकाशाराम कुरमदे

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥ ३॥
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ ४॥

---

१० नवम्बर] सूर्योदय ६। ३४ सूर्यास्त ५ । २६
पं० २५ कार्तिक]10 November [भा० कार्तिक १९

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥ ५ ॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥ ६ ॥

---

११ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३५ सूर्यास्त ५ । २५
पं० २६ कार्तिक] 11 November [भा० कार्तिक २०

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥ ७ ॥
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥ ८ ॥

१२ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३५ सूर्यास्त ५ । २५
पं० २७ कार्तिक] 12 November [भा० कार्तिक २१

३१८ (दिन) मार्गशीर्ष कृष्ण ९ रवि [गीता

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः॥ ९॥
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः १०

१३ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३६ सूर्यास्त ५ । २४

पं० २८ कार्तिक] 13 November [भा० कार्तिक २२

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥११॥
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥१२॥

---

१४ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३७ सूर्यास्त ५ । २३
पं० २९ कार्तिक] 14 November [भा० कार्तिक २३

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥१३॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ।१४।

१५ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३७ सूर्यास्त ५ । २३
पं० १ मार्ग० २०१७] 15 November [भा० कार्तिक २४

एकादशीव्रत

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः १५
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ॥१६॥

---

१६ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३८ सूर्यास्त ५ । २२
पं० २ मार्गशीर्ष] 16 November [भा० कार्तिक २५

प्रदोष

११—

२२२ (दिन) मार्गशीर्ष कृष्ण १३ गुरु [गीता

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥१७॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥१८॥

१७ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३८ सूर्यास्त ५ । २२
पं० ३ मार्गशीर्ष] 17 November [भा० कार्तिक २६

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान् ।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१९॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् २०

---

१८ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ३९ सूर्यास्त ५ । २१
पं० ४ मार्ग०] 18 November [भा० कार्तिक २७

३२४ (दिन) मार्गशीर्ष शुक्ल १ शनि [गीता

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् २१
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ।२२।

१९ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । २०
पं० ५ मार्गशीर्ष] 19 November [भा० कार्तिक २८

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् २३
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि।२४।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभाग-योगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

---

२० नवम्बर] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । २०
पं० ६ मार्गशीर्ष] 20 November [भा० कार्तिक २९

ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु।२।

२१ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ४१ सूर्यास्त ५ । १९
पं० ७ मार्ग०] 21 November [भा० कार्तिक ३०

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ सोम

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥३॥
यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥४॥

३२८ (दिन) मार्गशीर्ष शुक्ल ५ बुध [गीता

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥५॥
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ६

२३ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । १८

पं० ९ मार्गशीर्ष] 23 November [भा० मार्गशीर्ष २

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥७॥
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः

३३० (दिन) मार्गशीर्ष शुक्ल ७ शुक्र [गीता

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥९॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥१०॥

---

२५ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । १८

पं० ११ मार्गशीर्ष] 25 November [भा० मार्गशीर्ष ४

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥११॥
अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१२॥

२६ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । १८
पं० १२ मार्गशीर्ष] 26 November [भा० मार्गशीर्ष ५

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१३॥
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥१४॥

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥१५॥
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१६॥

---

२८ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । १७
पं० १४ मार्गशीर्ष] 28 November [भा० मार्गशीर्ष ७

३३४ (दिन) मार्गशीर्ष शुक्ल ११ मंगल [गीता

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते १७
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥१८॥

---

२९ नवम्बर] सूर्योदय ६। ४३ सूर्यास्त ५। १७

पं० १५ मार्गशीर्ष] 29 November [भा० मार्गशीर्ष ८

एकादशीव्रत] [गीता-जयन्ती

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥१९॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् २०

---

३० नवम्बर] सूर्योदय ६।४३ सूर्यास्त ५।१७
पं० १६ मार्ग०] 30 November [भा० मार्ग० ९

प्रदोष

३३६ (दिन) मार्गशीर्ष शुक्ल १२ गुरु [गीता

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥२१॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥

---

१ दिसम्बर १९६०] सूर्योदय ६ । ४४ सूर्यास्त ५ । १६
पं० १७ मार्ग०] 1 December 1960 [भा० मार्ग० १०

ॐतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥२३॥
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥

तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः ।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते॥२६॥

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥२७॥
अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

ॐ

अष्टादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् ।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ २ ॥
त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः ।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥ ३ ॥

५ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १५
पं० २१ मार्गशीर्ष]5 December[भा०मार्गशीर्ष१४

पौष कृष्ण २ सोम

प्रकाशनम् टूरम्ह

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम ।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः॥ ४ ॥
यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥५॥
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥६॥

६ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १५
पं० २२ मार्गशीर्ष] 6 December [भा० मार्गशीर्ष १५

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ ७ ॥
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत्॥ ८ ॥
कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः॥

७ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १५
पं० २३ मार्गशीर्ष]7 December[भा०मार्गशीर्ष १६

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते ।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः।१०।
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ।११।
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् ।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित् १२

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे ।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥१४॥
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥१५॥

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥१६॥
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥१७॥
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥१८॥

---

१० दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं०२६मार्गशीर्ष]10 December [भा०मार्गशीर्ष १९

३४६ (दिन) पौष कृष्ण ८ रवि [गीता

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि।१९।
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्२०
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्॥२१॥

११ दिसम्बर] सूर्योदय ६। ४६ सूर्यास्त ५। १४
पं०२७ मार्गशीर्ष] 11 December[भा०मार्गशीर्ष२०

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम् ।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥२३॥
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः ।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥२४॥

---

१२ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० २८ मार्गशीर्ष] 12 December [भा० मार्गशीर्ष २१

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् ।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥२५॥
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते
रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥२७॥

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते॥२८॥
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥२९॥
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥

---

१४ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । १३
पं० ३०मार्गशीर्ष]14December[भा०मार्गशीर्ष२३

एकादशीव्रत

३५० (दिन) पौष कृष्ण १२ गुरु [गीता
यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च ।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी।३१।
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ३२
धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी॥

---

१५ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । १३
पं०१पौष सं०२०१७]15December[भा०मार्ग०२४

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी।३५।
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति।३६।

१६ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४८ सूर्यास्त ५ । १२
पं० २ पौष] 16 December [मा० मार्गशीर्ष २५

प्रदोष

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ३७
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥३८॥
यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥३९॥

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः ४०
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥४१॥
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।४२।

१८ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४८ सूर्यास्त ५ । १२
पं० ४ पौष] 18 December [भा० मार्गशीर्ष २७

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥४३॥
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ।४४।
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु॥४५॥

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ४६
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्।४७।
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः॥४८॥

---

२० दिसम्बर] सूर्योदय ६। ४९ सूर्यास्त ५। ११
पं० ६ पौष] 20 December [भा० मार्गशीर्ष २९

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ४९
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥५०॥
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥५३॥
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥५४॥

२२ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४९ सूर्यास्त ५ । ११
पं० ८ पौष] 22 December [भा० पौष १ शक १८८२

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥५५॥
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥५६॥
चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥५७॥

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ५८
यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति५९
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥

२४ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४८ सूर्यास्त ५ । १२
पं० १० पौष] 24 December [भा० पौष ३

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥६१॥
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६३॥

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ६४
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ६५
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ६६

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति।६७।
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥६८॥
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥६९॥

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥७०॥
श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥७२॥

२८ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । १३
पं० १४ पौष] 28 December [भा० पौष ७

एकादशीव्रत

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥७३॥

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥७४॥
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७६॥
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ७७

३० दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । १२
पं० १६ पौष] 30 December [भा० पौष ९

प्रदोष

३६६ (दिन) पौष शुक्ल १४ शनि [गीता

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

---

३१ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । १३
पं० १७ पौष] 31 December [भा० पौष १०

भास्कर च०
महानन्द भट्ट
काशीनाथ पु
सुनका क
सोमनाथ क०

पुष्पमुद्र १५½
ह्रसुन मुद्र १ को०
गुलाम २ कोर ६ वि० X
ह्रसुन २ को० १२ वि०
आदिक ७½ वि०

४ को० ५½ वि०
१ को० ४ वि०

२२० रु० वसूल दर ५५

पीताम्बर
सोमनाथ

भाद्रपद पूर्णिमा ठीक ५
आश्विन कृष्ण तृतीया × ३
पंचमी ठीक ५
सप्तमी × ३
नवमी ठीक ५
दशमी ठीक ३
द्वादशी ३
आश्विन शुक्ल पंचमी ठीक ५
वैशाख सुदि पूर्णिमायां नद्रीनाथ भा०
२६ कार्तिक कुमारजी जन्म
३ सावन मानजी पु० जन्म

स्मरण-पत्र

१४ फर्वरी ९१ प्रकाशमनूर

श्रीहरिः

गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-सूची

श्रीमद्भगवद्गीता

गीता-तत्त्वविवेचनी	४)
गीता-शांकरभाष्य	२।।।)
गीता-रामानुजभाष्य	२।।)
गीता बड़ी पदच्छेद, अन्वय, मोटा टाइप	१।)
गीता प्रत्येक अध्यायके माहात्म्यसहित अ०	।।।=)
सजिल्द	१।)
गीता मझोली पदच्छेद, अन्वय, अजिल्द	।।≡)
सजिल्द	१)
गीता सटीक मोटे अक्षर-वाली अजिल्द	।।)
सजिल्द	।।।=)
गीता मूल मोटा टाइप	।–)
सजिल्द	।।–)
गीता केवल भाषा	।)
गीता-पञ्चरत्न	≡)
गीता छोटी भाषाटीका	=)।।
सजिल्द	।)।।
गीता मूल विष्णुसहस्र-नामसहित ...	≡)
गीता ताबीजी	=)
गीता मूल विष्णुसहस्र-नाम ...	–)।।
सजिल्द	=)।।
गीता-पञ्चाङ्ग	।≡)

उपनिषद् (शांकरभाष्य)

ईशावास्य सानुवाद	≡)
केन ,,	।।)
कठ ,,	।।–)
मुण्डक ,,	।≡)
प्रश्न ,,	।≡)
उपनिषद् खण्ड १–	२।।=)
माण्डूक्य सानुवाद	१)
ऐतरेय ,,	।=)
तैत्तिरीय ,,	।।।–)
उपनिषद् खण्ड २–	२।।≡)
बृहदारण्यकोपनिषद्	५।।)
छान्दोग्य सानुवाद	३।।।)
श्वेताश्वतर ,,	।।।=)

ईशादि नौ उपनिषद् अन्वय,
हिंदी-व्याख्यासहित २)
ईशावास्य सानुवाद -)
वेदान्तदर्शन सानुवाद २)
पातञ्जलयोगदर्शन, सटीक ।।।)
सजिल्द १)
पातञ्जलयोगप्रदीप मूल्य ६)
लघुसिद्धान्तकौमुदी ।।।)

महाभारत–सटीक

[प्रथम खण्ड] (आदि, सभापर्व मूल्य ११)
[द्वितीय खण्ड] (वन, विराटपर्व) मूल्य १२।।)
[तृतीय खण्ड] (उद्योग, भीष्मपर्व) मूल्य १२।।)
[चतुर्थ खण्ड] (द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्रीपर्व) मूल्य १५)
[पञ्चम खण्ड] (शान्ति-पर्व) मूल्य ११।।)
[षष्ठ खण्ड] (अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक, स्वर्गारोहणपर्व) मूल्य १२।।)

श्रीमन्महाभारतम्–मूल

[प्रथम भाग] (आदि, सभा, वनपर्व) मूल्य ६)
[द्वितीय भाग] (विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोणपर्व) मूल्य ... ६)
[तृतीय भाग] (कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्तिपर्व) मूल्य ६)
[चतुर्थ भाग] (अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक, स्वर्गारोहणपर्व) मूल्य ४।।)

श्रीमद्भागवत

श्रीशुक-सुधासागर २०)
भागवत महापुराण
(सटीक १५)
भागवत सुधासागर ८।।)
मूल—मोटा टाइप ६)
भागवत मूल—गुटका ३)
प्रेम-सुधासागर ३।।)
श्रीभागवतामृत १।।।)

एकादश स्कन्ध	१)
सजिल्द	१।=)
श्रीविष्णुपुराण सटीक	४)
अध्यात्मरामायण सटीक	३)

श्रीरामचरितमानस

बृहदाकार, सटीक	१५)
मोटा टाइप, सटीक	७॥)
मझला साइज, सटीक	३॥)
मोटा टाइप—मूल	४)
पाठ-भेदवाली, मूल	३)
मझला साइज, मूल	२)
गुटका-मूल, सजिल्द	।॥)
बालकाण्ड-मूल	॥=)
,, सटीक	१=)
अयोध्याकाण्ड-मूल	॥)
,, सटीक	।॥–)
अरण्यकाण्ड-मूल	≶)
,, सटीक	।)
किष्किन्धाकाण्ड-मूल	=)
,, सटीक	=)
सुन्दरकाण्ड सटीक	।)
लङ्काकाण्ड-मूल	।)
,, सटीक	॥)
उत्तरकाण्ड-मूल	।)
,, सटीक	॥)
लीला-चित्र-मन्दिर-दर्शन	७)
गीता-भवन-चित्र-दर्शन	२।)
मानस-रहस्य, अजिल्द	१।)
सजिल्द	१॥=)
मानस-शंका-समाधान	॥)
विनय-पत्रिका, सटीक	१)
सजिल्द	१।=)
गीतावली, सटीक	१)
सजिल्द	१।=)
कवितावली, सटीक	॥–)
दोहावली, सटीक	॥)
ईश्वरकी सत्ता और महत्ता	१।)
सजिल्द	१॥=)
सूर-विनय-पत्रिका	।॥=)
सजिल्द	१।)
सूर-रामचरितावली	॥≶)
सजिल्द	१–)

श्रीकृष्ण-बाल-माधुरी	।।।=)
सजिल्द	१।)
श्रीकृष्णमाधुरी	१)
सजिल्द	१।=)
अनुराग-पदावली	१)
सजिल्द	१।=)
शरणागति-रहस्य	।।।=)
व्रतपरिचय	१।।।)
सजिल्द	२=)
प्रेम-योग	१।।)
श्रीतुकाराम-चरित्र	१।=)
सजिल्द	१।।।)
मानसिक दक्षता	१)
सजिल्द	१।।)
श्रीगोविन्दवैभवम्	१)
सजिल्द	१।=)
महत्त्वपूर्ण शिक्षा	१)
सजिल्द	१।=)
परम साधन	१)
सजिल्द	१।=)
मनुष्य-जीवनकी सफलता	१)
सजिल्द	१।=)

परमशान्तिका मार्ग	१)
सजिल्द	१।=)
विष्णुसहस्रनाम	।।।=)
दुर्गासप्तशती मूल, मोटा टाइप, आडी खुलनेवाली	१)
सजिल्द	१।=)
दुर्गासप्तशती सटीक	।।।)
सजिल्द	१)
दुर्गासप्तशती-मूल	।।)
सजिल्द	।।।)
आनन्दमय जीवन	।।।-)
स्वर्ण-पथ	।।।)
सत्सङ्गके बिखरे मोती	।।।)
एक महात्माका प्रसाद	।।।)

तत्त्व-चिन्तामणि (बड़ा)

भाग १	अजिल्द	।।=)
	सजिल्द	१)
,, २	अजिल्द	।।।=)
	सजिल्द	१।)
,, ३	अजिल्द	।।≡)
	सजिल्द	१-)
,, ४	अजिल्द	।।।-)
	सजिल्द	१[illegible])

तत्त्व-चिन्तामणि अजि० |||-)
सजिल्द १≡)
,, ६ अजिल्द १)
सजिल्द १|=)
,, ७ अजिल्द १=)
सजिल्द १||)

तत्त्वचिन्तामणि (गुटका)

भाग १ अजिल्द |-)
सजिल्द ||)
,, २ अजिल्द |=)
सजिल्द ||-)
,, ३ अजिल्द |-)
सजिल्द ||)
,, ४ अजिल्द |=)
सजिल्द ||=)
,, ५ अजिल्द |=)
सजिल्द ||-)

श्रीचैतन्यचरितावली-

खण्ड १ |||=) सजिल्द १|)
,, २ १=) ,, १||)
,, ३ १) ,, १|=)
,, ४ ||=) ,, १)
खण्ड ५ |||) सजि० १=)

संत-वाणी (ढाई हजार अनमोल बोल) ||=)
सजिल्द |||=)

सूक्ति-सुधाकर ||=) स० १)
विदुरनीति ||-)
स्तोत्ररत्नावली ||)
सजिल्द |||=)
सत्सङ्ग-सुधा ||)
सुखी जीवन ||)

भगवच्चर्चा

भाग १ ||) सजिल्द |||=)
,, २ ||) ,, |||=)
,, ३ |||) ,, १=)
,, ४ |||-) ,, १≡)
,, ५ |||) ,, १=)
,, ६ |||) ,, १=)

श्रीभीष्मपितामह |≡)
सती द्रौपदी ||)
वल्लभाचार्य नाटक ||)
नित्यकर्मप्रयोग |≡)
जीवनका कर्तव्य |≡)

भक्त भारती |≡)
भक्त नरसिंह मेहता |=)
रामायणके कुछ
आदर्श पात्र |=)
उपनिषदोंके १४ रत्न |=)

लोक-परलोकका सुधार

(कामके पत्र)भाग १ |=)
,, ,, २ |=)
,, ,, ३ ||)
,, ,, ४ ||)
,, ,, ५ ||)
पढ़ो, समझो और करो |=)
बड़ोंके जीवनसे शिक्षा |=)
नारी-शिक्षा |=)
स्त्रियोंके लिये
कर्तव्य-शिक्षा |=)
पिताकी सीख |=)
तत्त्व-विचार |=)
रामाज्ञा-प्रश्न |=)
चोखी कहानियाँ |-)
उपयोगी कहानियाँ |-)
प्रेम-दर्शन |-)
विवेक-चूडामणि |-)
श्रीकृष्ण-गीतावली |-)
भवरोगकी रामबाण दवा |-)

भक्त-चरित-माला

भक्त बालक |-)
भक्त नारी |-)
भक्त-पञ्चरत्न |-)
आदर्श भक्त |-)
भक्त-चन्द्रिका |-)
भक्त सप्तरत्न |-)
भक्त कुसुम |-)
प्रेमी भक्त |-)
प्राचीन भक्त ||)
भक्त-सरोज |=)
भक्त-सुमन |=)
भक्त-सौरभ |-)
भक्त-सुधाकर ||)
भक्त-महिलारत्न |≡)
भक्त-दिवाकर |≡)
भक्त-रत्नाकर |≡)

आदर्श चरित-माला

भक्तराज हनुमान् |-)

सत्यप्रेमी हरिश्चन्द्र ।-)
प्रेमी भक्त उद्धव ≢)
महात्मा विदुर =)॥
भक्तराज ध्रुव ≢)
शिक्षाप्रद ग्यारह कहानियाँ ।)
सती सुकला ।)

परमार्थ-पत्रावली

,, भाग १ ।)
,, भाग २ ।)
,, भाग ३ ॥)
,, भाग ४ ॥)

अध्यात्मविषयक पत्र ॥)

कल्याण-कुञ्ज

,, भाग १ ।)
,, भाग २ ।-)
,, भाग ३ ।=)

महाभारतके आदर्श पात्र ।)
भगवान्पर विश्वास ।)
गीताप्रेस-लीला-चित्र-मन्दिर-दोहावली ।)
गीताद्वार (गीताप्रेसका प्रवेशद्वार) ।)

बाल-चित्र-रामायण

,, भाग १ ।)
,, भाग २ ।)

बाल-चित्रमय चैतन्यलीला ।-)
बाल-चित्रमय बुद्धलीला ।-)
बाल-चित्रमय श्रीकृष्ण-लीला (भाग १) ।=)
बाल-चित्रमय श्रीकृष्ण-लीला (भाग २) ।=)
भगवान राम भाग १ ।)
,, ,, भाग २ ।)
श्रीकृष्ण-रेखा-चित्रावलि (प्रथम खण्ड) ।=)
श्रीकृष्ण-रेखा-चित्रावलि (द्वितीय खण्ड) ।=)

भगवान श्रीकृष्ण

,, ,, भाग १ ।-)
,, ,, भाग २ ।-)

आरती-संग्रह	।)
सत्सङ्ग-माला	।)
बालकोंकी बातें	।)
वीर बालक	।)
सच्चे और ईमानदार बालक	।)
गुरु और माता-पिताके भक्त बालक	।)
बालकके गुण	≋)॥
वीर बालिकाएँ	≋)
दयालु और परोपकारी बालक-बालिकाएँ	≋)
जानकीमङ्गल	≋)
श्रीपार्वतीमङ्गल	=)

हिंदी बाल-पोथी

शिशु-पाठ भाग १	≋)
,, भाग २	≋)
,, भाग ३	।–)
,, भाग ४	।=)
दैनिक कल्याण-सूत्र	≋)
प्रार्थना	≋)
आदर्श नारी सुशीला	≋)
आदर्श भ्रातृ-प्रेम	≋)
मानव-धर्म	≋)
ध्यान और मानसिक पूजा	≋)
गीता-निबन्धावली	=)॥
साधन-पथ	=)॥
अपरोक्षानुभूति	=)॥
मनन-माला	=)॥
बालकोंकी बोलचाल	=)॥
गङ्गासहस्रनाम सटीक	=)॥
बालकोंको सीख	=)
बालकके आचरण	=)
बालककी दिनचर्या	=)
नवधा भक्ति	=)
बाल-शिक्षा	=)
श्रीभरतजीमें नवधा भक्ति	=)
गीताभवन-दोहा-संग्रह	=)
वैराग्य-संदीपनी	=)
बरवै रामायण	=)

भजन-संग्रह

प्रथम भाग =)
द्वितीय भाग =)
तृतीय भाग =)
चतुर्थ भाग =)
पञ्चम भाग =)
श्रीलक्ष्मीनृसिंहसहस्र-नामस्तोत्रम् =)॥
श्रीश्रीराधिकासहस्र-नामस्तोत्रम् =)
श्रीशिवसहस्रनाम-स्तोत्रम् -)॥
श्रीरामसहस्रनाम-स्तोत्रम् -)॥
शिवमहिम्नःस्तोत्रम्)॥।
श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्रम् =)
गजेन्द्रमोक्ष -)॥
बालप्रश्नोत्तरी -)॥
स्वास्थ्य-सम्मान-सुख -)॥
स्त्रीधर्मप्रश्नोत्तरी -)॥
नारीधर्म -)॥
गोपी-प्रेम -)॥
मनुस्मृति -)॥
हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम् -)॥
श्रीसीतासहस्रनाम-स्तोत्रम् -)॥
गायत्रीसहस्रनाम-स्तोत्रम् -)॥
तर्पण-विधि -)॥
वर्तमान शिक्षा -)॥
ध्यानावस्थामें प्रभुसे वा० -)॥
श्रीविष्णुसहस्रनाम सटीक -)॥
हनुमानबाहुक -)॥
शाण्डिल्य-भक्ति-सूत्र -)॥
श्रीसीताके चरित्रसे आदर्श शिक्षा -)।
मनको वश करनेके कुछ उपाय -)।
ईश्वर -)।
मूलरामायण -)।

रामायण-मध्यमा-परीक्षा-पाठ्य-पुस्तक	-)।
गङ्गालहरी	-)
हनुमानचालीसा	-)
विनय-पत्रिकाके बीस पद	-)
दीन-दुखियोंके प्रति कर्तव्य	-)
संध्योपासनविधि	-)
बाल-अमृत-वचन	-)
हरेरामभजन १४ माला	।-)
हरेरामभजन ६४ माला	१)
शारीरकमीमांसादर्शन	)।।।
गीतोक्त कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोगका रहस्य	)।।।
बलिवैश्वदेवविधि	)।।
संध्या विधिसहित	)।।
गोवध भारतका कलङ्क	)।।
गायका माहात्म्य	)।।
बलपूर्वक देवमन्दिर-प्रवेश और भक्ति	)।।
कुछ विदेशी वीर बालक	)।।
दोहावलीके ४० दोहे	)।।
सुगम उपासना	)।।
पातञ्जलयोगदर्शन	)।
रामरक्षास्तोत्रम्	)।।
सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम-स्तोत्रम्	)।।
श्रीकार्पण्यपञ्जिकास्तोत्र	)।।
मोहमुद्गर	)।।
नारदभक्ति-सूत्र	)।

चित्रावली

१५×२०		डाकखर्च
नं० १	२।।।)	१=)
नं० २	२।।।)	१=)
नं० ३	२।।।)	१=)

७।।×१०		डाकखर्च
नं० १	१।-)	।।।-)
नं० २	१।-)	।।।-)
नं० ३	१।-)	।।।-)

छोटी-छोटी ५२ पुस्तकोंके ४ पैकेट

पैकेट नंबर १, कुल पुस्तक १३, मूल्य ।॥)

सामयिक चेतावनी मू० –)
आनन्दकी लहरें मू० –)
गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र –)
श्रीप्रेमभक्तिप्रकाश मू० –)
ब्रह्मचर्य–पृष्ठ ३२, मू० –)
हिंदू-संस्कृतिका स्वरूप –)
सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय मू० –)
श्रीभगवन्नाम मूल्य –)
श्रीमद्भगवद्गीताका तात्त्विक विवेचन–पृष्ठ ६४, मू० –)
भगवत्तत्त्व–मूल्य –)
सिनेमा-मनोरञ्जन या विनाशका साधन मू० –)
हरेरामभजन दो माला)॥
जीवनमें उतारनेकी सोलह बातें)।
।॥)

पैकेट नंबर २, कुल पुस्तक ५, मूल्य ।)

संतमहिमा–मूल्य)॥
श्रीरामगीता–मूल्य)॥
विष्णुसहस्रनाम मूल)॥
वैराग्य–पृष्ठ ४०, मू०)॥
रामायण सुन्दरकाण्ड –)
।)

पैकेट नंबर ३, कुल पुस्तक १६, मूल्य ॥)

विनय-पत्रिकाके पंद्रह पद)॥
सीतारामभजन–मूल्य)॥
भगवान् क्या हैं ? मूल्य)॥
भगवान्की दया–मूल्य)॥
गीतोक्त सांख्ययोग और
निष्काम कर्मयोग–मू०)॥
सेवाके मन्त्र–मूल्य)॥
प्रश्नोत्तरी–पृष्ठ ३२, मू०)॥
विवाहमें दहेज–मू०)॥
सत्यकी शरणसे मुक्ति)॥

भगवत्प्राप्तिके विविध
उपाय—पृष्ठ ४०, मू०)॥
व्यापारसुधारकी आवश्यकता
और व्यापारसे मुक्ति)॥
स्त्रियोंके कल्याणके कुछ
घरेलू प्रयोग—मूल्य)॥
परलोक और पुनर्जन्म)॥
ज्ञानयोगके अनुसार
विविध साधन—मू०)॥
अवतारका सिद्धान्त मू०)॥
सत्सङ्गकी कुछ सार
बातें—पृष्ठ २४, मू०)॥
॥)

पैकेट नंबर ४, कुल पुस्तक १८, मूल्य ।)

धर्म क्या है ?—मूल्य)।
श्रीहरिसंकीर्तन-धुन—मू०)।
दिव्य सन्देश—मूल्य)।
तीर्थोंमें पालन करने योग्य
कुछ उपयोगी बातें)।
महात्मा किसे कहते हैं ?)।
ईश्वर दयालु और न्याय-
कारी है—मू०)।
प्रेमका सच्चा स्वरूप—मू०)।
हमारा कर्तव्य—मू०)।
कल्याणप्राप्तिकी कई
युक्तियाँ—मू०)।
शोक-नाशके उपाय)।
ईश्वरसाक्षात्कारके लिये
नामजप सर्वोपरि
साधन है—पृष्ठ २४, मू०)।
चेतावनी—पृष्ठ २४, मू०)।
त्यागसे भगवत्प्राप्ति—मू०)।
श्रीमद्भगवद्गीताका
प्रभाव—पृष्ठ २०, मू०)।
लोभमें पाप आधा पैसा
सप्तश्लोकी गीता आधा पैसा
गजल गीता—दो प्रति)।
।)

पैकेट नं० १ से ४ तक, चारोंका एक साथ मूल्य १॥।), डाकखर्च १।=)

Our English Publications

The Philosophy of Love	1-0-0
Gems of Truth (First Series)	0-12-0
Gems of Truth (Second Series)	0-12-0
Bhagavadgītā [with Sanskrit text and an English translation]	0-4-0
Bound	0-6-0
Gopis' Love for Sri Krishna	0-4-0
Way to God-Realization	0-4-0
The Divine Name and Its Practice	0-3-0
Wavelets of Bliss	0-2-0
The Immanence of God	0-2-0
What is God?	0-2-0
The Divine Message	0-0-9
What is Dharma?	0-0-9

व्यवस्थापक—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

साधक-संघ

देशके नर-नारियोंका जीवनस्तर यथार्थरूपमें ऊँचा हो; इसके लिये साधक-संघकी स्थापना की गयी है। इसमें सदस्योंको कोई शुल्क नहीं देना पड़ता। सदस्योंके लिये ग्रहण करनेके १२ और त्याग करनेके १६ नियम हैं। प्रत्येक सदस्यको एक डायरी दी जाती है, जिसमें वे अपने नियमपालनका ब्यौरा लिखते हैं। सभी कल्याणकामी स्त्री-पुरुषोंको इसका सदस्य बनना-बनाना चाहिये।

संयोजक—'साधक-संघ', पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

श्रीगीता और रामायणकी परीक्षाएँ

श्रीगीता और रामचरितमानस—समितिने इन ग्रन्थोंके द्वारा धार्मिक शिक्षाका प्रचार करनेके लिये परीक्षाओंकी व्यवस्था की है। उत्तीर्ण छात्रोंको पुरस्कार भी दिया जाता है।

संयोजक—श्रीगीता-रामायण-परीक्षा-समिति;
पो० ऋषिकेश (देहरादून)

गीता-जयन्ती-उत्सव

श्रीमद्भगवद्गीता-सरीखे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थकी जयन्ती 'मासानां मार्गशीर्षोऽहं' के अनुसार प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को मनुष्यमात्रको घर-घरमें अवश्य ही मनानी चाहिये।

श्रीगीता-रामायण-प्रचार-सङ्घ

श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानस—ये दो विश्वसाहित्यके अमूल्य रत्न हैं। इन दोनों मङ्गलमय ग्रन्थोंके पारायणका अधिकाधिक प्रचार हो, इसीलिये इस सङ्घकी स्थापना की गयी है। यह प्रचार-कार्य करीब ११॥ वर्षसे चल रहा है।

नियम और आवेदन-पत्र कार्यालयसे मँगा सकते हैं।

मन्त्री—श्रीगीता-रामायण-प्रचार-सङ्घ;
पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

*	जुलाई (7) July						अगस्त (8) August						सितम्बर (9) September					
रवि	०	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८	*	०	४	११	१८	२५	*
सोम	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९	*	०	५	१२	१९	२६	*
मंगल	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	३०	*	०	६	१३	२०	२७	*
बुध	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	३१	*	०	७	१४	२१	२८	*
गुरु	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०	*	१	८	१५	२२	२९	*
शुक्र	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६	०	*	२	९	१६	२३	३०	*
शनि	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७	०	*	३	१०	१७	२४	०	*

*	अक्टूबर (10) October.						नवम्बर (11) November						दिसम्बर (12) December					
रवि	०	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७	*	०	४	११	१८	२५	*
सोम	०	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८	*	०	५	१२	१९	२६	*
मंगल	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९	*	०	६	१३	२०	२७	*
बुध	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	३०	*	०	७	१४	२१	२८	*
गुरु	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	०	*	१	८	१५	२२	२९	*
शुक्र	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०	*	२	९	१६	२३	३०	*
शनि	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६	०	*	३	१०	१७	२४	३१	*

संवत् २०१७ आषाढ़से संवत् २०१७ मार्गशी

सं० २०१७ आ०																
	ति.	कृ१	२	३	४	५	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१४	३
	वा.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	
	घ.	२७	२१	१५	३	४	५५	५६	५३	५१	५१	५४	५७	६०	२	
	न.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	

सं० २०१७ श्रा०																
	ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३
	वा.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	
	घ.	४६	३९	३३	२८	२५	२१	२०	२०	२१	२३	२६	३०	३५	४०	४
	न.	पू.	उ.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	

सं० २०१७ भा०															
	ति.	कृ१	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४
	वा.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.
	घ.	२	५४	५१	४९	४९	४९	५१	५५	५९	६०	४	९	१४	१८
	न.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.

सं० २०१७ क्वा०															
	ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	वा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.
	घ.	२४	२१	१९	१९	२०	२२	२५	२९	३४	३९	४४	४९	५२	५५
	न.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	श्ले.	म.

सं० २०१७ का०																
	ति.	कृ१	२	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	
	वा.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	
	घ.	५१	५१	५२	५४	५७	६०	१	६	१२	१७	२१	२५	२८	२९	
	न.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	

सं० २०१७ मा०																
	ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	
	वा.	शु.	श.	र.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	
	घ.	२६	२८	३२	३६	४१	४७	५२	५७	६०	१	३	४	४	३	
	न.	म.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	ह.	चि.	

ीर्षंतककी तिथि, वार, घड़ी और नक्षत्र

३०	शु१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	*
शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	*
७	१२	१७	२१	२४	२६	२६	२७	२५	२२	१९	१४	९	३	५०	*
आ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	*
३०	शु१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.
४५	४९	५५	५३	५६	५६	५४	५१	४८	४३	३८	२	२६	२०	१४	८
पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.
३०	शु१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	*
चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	*
२३	२३	२५	२५	२३	२१	१७	१३	८	२	५०	४४	३८	३२	२७	*
म.	पू.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	*
३०	शु१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१४	१५	*
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	*
५६	५६	५५	५२	४९	४४	३९	३४	२८	२२	१६	१०	४	५६	५३	*
पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	ध.	श.	पू.	उ.	*
१४	३०	शु१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	म.	बु.	बृ.
२९	२७	२५	२०	१८	१३	७	१	५०	४४	३८	३४	३०	२७	२६	२६
ह.	चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ
१४	शु१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	५३	४८	४३	३७	३१	२५	१९	१४	१०	६	४	२	२	३	५
स्वा.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.